भूगोल वर्णन

जिसको

मुताबिक़ अव्वल जुग़राफ़िया जदीद के
श्रीयुत मिस्टर विलियम हेगडफ़ोर्ड
साहब बहादुर पूर्व डैरेक्टर आफ़
पब्लिकइन्स्ट्रक्शन् सूबह अवधकी
आज्ञानुसार
मुंशीरामप्रसाद साहब सिकण्डमास्टर
नारमलस्कूल लखनऊ ने बनाया था
वही
श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमदेशाधिकारी
श्रीयुत नव्वाब लेफ्टिनेण्ट गवर्नरबहादुरको
आज्ञानुकूल
श्रीमद्विद्या सम्पन्न श्रीसाहिब इन्स्पेक्टर
जनरल वीरेश आफ़पब्लिक इन्स्ट्रक्शन्
पश्चिमोत्तर व अवधदेशीय की
अनुमति से

लखनऊ
मुंशीनवलकिशोर के छापाघर यन्त्रालयमें छपा
अक्टूबर सन् १८७८ ई०

भूगोल वर्णन

पहिला अध्याय ॥

पृथ्वीके आकार और परिमाण और गतिका विषय ॥

१—पृथ्वी नारंगी के समान गोल है ॥

२—इसके बहुत प्रमाणहैंकि पृथ्वी चपटी नहीं है ॥

१—जब कि कोई जहाज़ तीर को आता है तो पहिले उसका मस्तूल देख पड़ता है और वह जहाज़ पानीसे छिपा हुआ है और ज्यों ज्यों निकट आता जाता है त्यों त्यों क्रम २ से दिखाई देता है ॥

२—मनुष्य सदा पूर्व्व या पश्चिम ओर से जहाज़ में चलकर और फिर अन्त में मुंह न मोड़ उसी स्थान पर आजाते हैं जहां से चले थे ॥

३—जब चन्द्रग्रहण होताहै तब पृथ्वीकी छाया चांद पर वृताकार पड़ती है जो पृथ्वी गोल न होती तो सदा गोल छाया न देख पड़ती ॥

४—धरती का व्यास लगभग आठ सहस्र मील और परिधि अर्थात् घेरा पच्चीस सहस्र मील है ॥

५—पृथ्वी की दो चाल हैं एक तो अपनी कील पर गोल घूमती है दूसरी चाल से नारङ्गी के समान सूर्य के और पास पूर्व से पश्चिम को फिरती है ॥

६—धरती जितने कालमें अपनी कीलपर घूमती है उसे दिन रात कहते हैं ॥

७—इसी दिन रात के समान चौबीस भाग में से प्रत्येक भाग को घण्टा कहते हैं ॥

८—पृथ्वी की इसी गोल चाल के कारण अंधेरा और उजेला होता है और यह आपस में बारी २ से बदलते रहते हैं ॥

९—जब तक कोई देश सूर्य के सामने है वहां उजेला अर्थात् दिनहै और जब वह देश धरती की चालके कारण सूर्यके सामने से फिरता जाता है वहां रात होती जाती है ॥

१०—पृथ्वी सीधी अगाड़ी को नहीं चलती वह सूर्यसे ९५000000 मील दूर रहकर उसके चारों ओर अण्डाकार भाग में फिरती है ॥

११—पृथ्वी अपने मार्ग में ३६५ दिन छः घण्टे में फिर उसी स्थान पर आती है जहां से चली थी उस काल को एक सौर वर्ष कहते हैं ॥

१२—पृथ्वी के चलने का जो मार्ग है उसे उसकी कक्षा कहते हैं उसके बीचकी चाल को वर्षवारी चाल और उसकी कील पर गोल फिरने को दिनवारी चाल कहते हैं ॥

१३—पृथ्वी उस कल्पित रेखा पर घूमती है जो उसके केन्द्रमें होकर उत्तर दक्षिण दोनों ओर उसके धरातल तक जाती है उस रेखा को उसकी कील

कहते हैं और उसकीलके दोनों सिरोंको पृथ्वी के ध्रुवकहते हैं ॥

१४—पृथ्वी की कीलके एक सिरेको उत्तर ध्रुव दूसरे को दक्षिण ध्रुव कहते हैं ॥

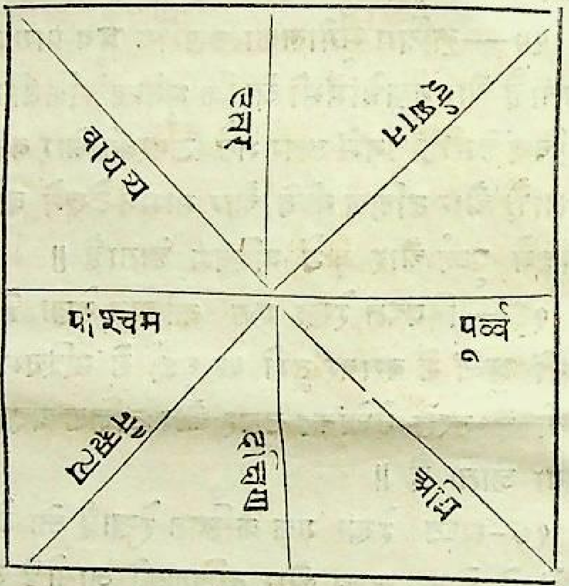
१५—कृत्रिम भूगोलका उत्तरीय ध्रुव प्रायःऊपर रहता है और नक़्शोंमेंभी जो कि भूगोलके किसी भाग के चित्र होतेहैं उनमें उत्तर सदैवऊपरकी ओर बनाया जाताहै और दक्षिण नीचे और सामने देखने वालेके दाहिने पूर्व्व और बायें पश्चिम होताहै ॥

१६—विषवत रेखा एक कल्पित रेखा है जो दोनों ध्रुवों से बराबर दूरी पर पूर्व्व से पश्चिम को जाती है इस्से देशोंका उत्तर और दक्षिण अक्षांश लिया जाता है ॥

१७—मध्य रेखा एक कल्पित रेखाहै जो दोनों ध्रुवों से होकर उत्तर और दक्षिणको जातीहै इस्से देशों का देशान्तर पूर्व्वसे पश्चिम तक जाना जाताहै अंगरेज़ी नक़्शों में मध्य रेखा ग्रीनिच नगर से जो लंडन के निकट है देशान्तर लिया जाता है ॥

१८—मुख्यचारदिशाहैं उत्तर दक्षिणपूर्व्व पश्चिम ॥

१६——मुख्य दिशा और उनके कोनोंका चिन्ह नीचे लिखा जाता है ॥



दूसरा अध्याय ॥

पृथ्वीके जल थलादि भागोंकी परिभाषा ॥

भूगोल विद्या धरतीके उपरितलका वर्णन है ॥

धरतीका उपरितल कुछ जल और कुछ थल से बना, उस सबके तीन भागकर दो भागसे अधिक जल और बाक़ी थल है ॥

जल वा थल के जो भाग आकार और परिमाण में एक से हैं वे एकही नाम सेबोले जाते हैं ॥

थल के भाग	जल के भाग
१—थलके बड़े भाग को जिसमें बहुतसे देश हों महाद्वीप कहते हैं ॥	१—जलके बड़े भाग को जिसमें अनेक समुद्र संयुक्त हों महासागर कहते हैं ॥
२—पृथ्वी का भाग जो बहुधा पानी से घिरा हो उसे प्रायद्वीप कहते हैं ॥	२—समुद्र का भाग जो थोड़े मुहसे थल में जाता है उसे खाल कहते हैं ॥
३—थल का भाग जो चारोंओर जलसे घिरा हो उसे द्वीप कहते हैं ॥	३—पानी का भाग जो चारों ओर थलसे घिरा हो उसे झील कहते हैं ॥
४—जो थलका भाग छोटा सूच्याकार होकर समुद्रमेंजाय उसकी नोक को अन्तरीप बोलते हैं ॥	४—महासागर का भाग जो दूर तक थल में जाता है उसे आखात बोलते हैं ॥
५—धरती का एक सूक्ष्म भाग अर्थात् एक टुकड़ा जो दो बड़े भागों	५—महासागर का जो भाग कम चौड़ा होकर अपने से दो बड़े

को मिलाता है उसे डमरु मध्य कहते हैं ॥

६—ऊंची पथरीली धरती को जिसकी चोटी बर्फ से ढकी हो उसे पर्व्वत और जो दूर तक चली गई हो तो पर्व्वत श्रेणी कहते हैं ॥

७—इनसे जो छोटी उंचाईके हैं उन्हें पहाड़ी कहते हैं ॥

८—पृथ्वी का वह भाग जो समुद्रसे मिला हो तट वा किनारा कहलाता है ॥

९—देश का प्रधान नगर जहां राजा रहता हो उसे राजधानी कहते हैं ॥

भागों को मिलाता है उसे मुहाना कहते हैं ॥

६—पानी की धारा जो पहाड़ी या पहाड़ या झील से निकलकर महासागर आदि में गिरती है उसे नदी कहते हैं ॥

७—और जो पानी किसी नदी से निकल कर उस्से जुदा बहै उसे उसका भाग या सोता कहते हैं ॥

८—वह नदी जो अपना पानी दूसरी नदी में डालती है उसे उसकी सहायक नदी कहते हैं ॥

९—जब नदी बहुत धारोंसे समुद्र में यूनानी दालके आकार से गिरती है और जो धरती उसके दहानों के मध्यमें है उसे नदी का डेल्टा कहते हैं Δ ॥

१०—खाड़ी पर जो कोई ऐसा स्थान हो जहां जहाज़ ठहरे उसे बन्दर कहते हैं ॥

११—धरती का एक बड़ा भाग जिसमें बहुतसे नगर और क़सबे हों और एक मुख्य जाति औरभाषा के लोग बस्ते हों उसे देश कहते हैं ॥

१२—देश के भाग को प्रदेश या ज़िला कहते हैं जिसमें बहुत से देश संयुक्त हों उसे राज्य कहते हैं ॥

तीसरा अध्याय—कृत्रिम विभाग ॥

१ पाठ ॥

थलका वर्णन ॥

१—लण्डन नगरके पूर्व ओर जो अर्द्धगोल है उसे और उसके आस पासके समुद्र और द्वीपों को पुरानी दुनियां कहते हैं ॥

२—लण्डन के पश्चिम जो दूसरा महाद्वीप और उसके पासके जो समुद्र और द्वीप हैं उन्हें नई दुनियां कहते हैं ॥

३—धरती के ये भाग नई और पुरानी दुनियां इसलिये कहे जाते हैं कि पहिले हमारा महाद्वीप बना था और जो लोग इसमें रहा करतेथे वे दूसरे द्वीप के वृत्तान्तको कुछ नहीं जानते थे सन् १४९२ई० में बड़े नामी यूरप के रहने वाले नाविक कलम्बस नाम साहब ने उसको प्रकाश किया ॥

४—ये दोनों महाद्वीप अपने द्वीप और समुद्रों सहित चार भागमें विभाग किये गये हैं ॥

५—इन खण्डोंमें पुरानी दुनियांपर तीन खण्ड यूरप, एशिया, आफ्रिका और नई दुनियां में आमेरिका है ॥

६—यद्यपि यूरप चारों खण्डों में सबसे छोटा है तौभी बुद्धिमानी, द्रव्य, बस्ती और पराक्रम में सबसे बड़ा है ॥

७—पूर्वोक्त खण्डोंके बनाने के पीछे बहुत से नये २ द्वीप जाने गये हैं इन सब द्वीपोंको ओशनिया कहते हैं ॥

२ पाठ ॥

पानी का वर्णन ॥

८—सम्पूर्ण महासागर पांच बड़े भागोंमें विभाग किया गया है ॥

९—पहिला जो उत्तरीय ध्रुव और यूरप, एशिया, और आमेरिकाके उत्तरीय किनारों के बीचमें जलहै उसे उत्तर महासागर अर्थात हिम समुद्र कहते हैं ॥

१०—दूसरा जो दक्षिण ध्रुव के आस पास का

जल है उसे दक्षिण महासागर अर्थात् दक्षिण हिम समुद्र कहते हैं और यह समुद्र बहुधा जमा हुआ रहता है इसीसे उसमें बहुत कम जहाज़ गये हैं ॥

११—तीसरा आटलाण्टिक महासागर जिसकी पूर्व्व सीमा पर यूरप और आफ्रिका और उसके पश्चिम आमेरिका है ॥

१२—चौथा पासफिक महासागर जिसकी पश्चिम सीमा एशिया और आष्ट्रेलिया और पूर्व सीमा आमेरिका है ॥

१३—पांचवां हिन्द का महासागर जिसका विस्तार आफ्रिका से ले आष्ट्रेलिया तक और हिन्द से दक्षिण महासागर तक है ॥

चौथा अध्याय ॥

एशिया के विषय में ॥

१ पाठ ॥

देशों का वर्णन ॥

१—एशिया की चारों सीमा ये हैं ॥

उत्तर—हिमसागर—पूर्व—स्थिर महासागर—दक्षिण—हिन्द का सागर—पश्चिम—लालसागर स्वेज़ नाम डमरुमध्य—भूमध्यस्थ समुद्र—मारमोरा और कालासागर—क़ाफ़ नाम पर्व्वत और कास्पियन समुद्र—यूराल नदी, यूराल पहाड़ ॥

२—एशिया में मुख्य १२ देश हैं ॥

उत्तर—एशियाई रूस

पूर्व्व—चीन—जापान

दक्षिण—श्याम—ब्रह्मा और हिंदुस्तान
पश्चिम—अरब—तुर्किस्तान
मध्यमें—तिब्बत—तातार—अफ़ग़ानिस्तान—फ़ारस

२ पाठ ॥

प्रसिद्ध प्रदेशों का वर्णन ।

१—तुर्किस्तान में शाम—यहूदिया—आर्मीनियां—मेसोपोटेमियां अर्थात् इराक़अरब—यहूदिया में ईसा मसीह पैदा हुये आर्मीनियां में लोग कहते हैं कि प्रलय के पीछे नूहने निवास किया मेसोपोटेमियांकी प्राचीन राजधानी बाबुल था जिसको महारानीसेमेरिमिसने प्रलय के २०० वर्ष पीछे बसाया था इसी नगरमें सिकन्दरशाह मसीहके ३२३ वर्ष पहिले मरे॥

२—हिंदुस्तान में पंजाब, कश्मीर, बङ्गाला पंजाब यहां तक सिकन्दरशाह आकेअपने देशकोलौटगया॥

कश्मीर—यह आब हवा और दुशालों के कारण प्रसिद्ध है॥

बङ्गाला—यहां की धरती उर्बरा है॥

३—रूस में सैबेरिया—इसके बायुजल ठंढे हैं॥ और बड़ी २ नदियां हैं और यहां के लोग वन्य हैं॥

४—अरबदेश—घोड़े, मुसल्मानी मत और भाषा के कारण प्रसिद्ध है॥

३ पाठ ॥

प्रायद्वीपों का वर्णन ।

१—प्रायद्वीप कामस्कटका—इसमें बहुत ज्वाला मुखी पहाड़ हैं॥

२—प्रायद्वीप कोरिया—यह चीनके आधीन है ॥

३—प्रायद्वीप हिन्दी चीन—यह श्याम, ब्रह्मा मलाका और मलाया से संयुक्त ॥

४—प्रायद्वीप दक्षिणी हिंदुस्तान—अरब समुद्र और बङ्गाले की खाड़ी के बीच में है ॥

५—एशियायी कोचक या अनाटोलिया—यह रूम का वह भाग है जो पश्चिम ओर समुद्र में चला गया है ॥

४ पाठ ॥

अन्तरीप और डमरूमध्य का वर्णन ।

१—पूर्व्वी अन्तरीप एशिया की पूर्व्वी नोक है ॥

२—लापटका अन्तरीप—यह प्रायद्वीप कामस्कटका की दक्षिणी नोक है ॥

३—नंप् अन्तरीप—यह चीनकी पूर्व्वी नोक है ॥

४—रोमानियां अन्तरीप—यह मलाया की दक्षिणी नोक है ॥

५—रासुल्हद्द अन्तरीप—यह अरबकी पूर्व्वी नोक है ॥

(१)—स्वेज़ नाम डमरू मध्य जो एशिया को आफ्रिका से मिलाता है ॥

(२)—किरा नाम डमरू मध्य—यह मलाया को श्याम से मिलाता है ॥

५ पाठ ॥

पर्ब्बतों का वर्णन ।

१—आलटेन श्रेणी—यह श्रेणी रूस के दक्षिण

कामस्कटकासे तातारतक कईएक नामोंसे प्रसिद्ध है ॥

२—हिमालय श्रेणी—यह हिंदुस्तान की उत्तरीय सीमा है, सबसे ऊंची चोटी इसमें अवारास्त उससे उतर, कांचन शृङ्ग, धवलागिरी इत्यादि हैं ॥

३—हिंदूकुश—यह अफ़ग़ानिस्तान और तातार के मध्य में है ॥

४—बिलोरताग—यह तातार अरल को तातार चीन, से जुदा करता है ॥

५—अलबुर्ज़—यह फ़ारस के उत्तर और कास्पियन के दक्षिण है ॥

६—काकेसस अर्थात् काफ़—यह कास्पियन समुद्र और कालासागर के बीचमें है ॥

७—तारस—यह मारमोरा समुद्र और फ़ारस के पश्चिम सीमा के बीच में है ॥

८—पूर्व्वी और पश्चिमी घाट—यह दक्षिणी हिन्द की पूर्व्वी और पश्चिमी सीमा हैं ॥

इन पर्व्वत श्रेणियों को छोड़कर दो और पर्व्वत हैं॥

(१)—आरारात पहाड़—जहां प्रलय के पीछे नूह की नौका ठहरी ॥

(२)—सेना पर्व्वत अर्थात तूर पहाड़—जहां मूसा को ईश्वर ने व्यवस्था दी ॥

६ पाठ ॥

झीलोंका वर्णन ॥

१—झील वा समुद्र कास्पियन जिसकी, चारों सीमा रूस, तातार और फ़ारस हैं ॥

२—झील अरल—यह तातार में है ॥

३—बाईकालझील—यह सैबेरिया में इर्कटस्क नगर के समीप है ॥

४—वान, आर्मियां—यह दोनों कास्पियन और कालासागर के मध्य में हैं ॥

५—मुआ समुद्र—यह यहूदिया में है, इसका पानी ऐसा खारा है कि उसमें कोई मछली नहीं जी सकती और न कोई वृक्ष उसके तटपर जमता ॥

६—मानसरोवर और रावणराध—यह उत्तम झील तिब्बत में हैं ॥

७ पाठ ॥

समुद्रों का वर्णन ॥

१—एशिया में पासफ़िक महासागरके आधीन ये समुद्र हैं ॥

ओखाट्स्कसमुद्र—कामस्कटका और चीनी तातार के मध्य में है ॥

जापान का समुद्र—जापान और चीनी तातार के बीच में है ॥

पीतसमुद्र—कोरिया और चीनके मध्यमें है ॥

पूर्वी समुद्र—ल्यूक्यू और चीन के मध्यमें है ॥

चीन का समुद्र—चीन और प्रायद्वीप हिन्दी चीन और मलेशिया के मध्य में है ॥

२—हिन्द महासागर के ये समुद्र हैं ॥

बङ्गाले का आखात—ब्रह्मा और हिन्दुस्तानके मध्य में है ॥

लाल समुद्र—अरब और आफ्रिकाके मध्यमेंहै ॥

३—भूमध्यस्थसागर में ॥

श्याम का समुद्र—जो श्याम देश की पूर्वी सीमा है जिसे लेवाएट भी कहते हैं ॥

८ पाठ ॥

खाड़ी और खम्भात का वर्णन ।

१——उत्तर हिमसागर में ओबी की खाड़ी है ॥

२——स्थिर महासागर में अनाडिर——श्याम——और टांकिन की खाड़ी है ॥

३——हिन्द महासागर में ये खाड़ी हैं ॥

मैंनारकी खाड़ी—लङ्का और एशियाकेमध्यमेंहै ॥

खम्भात की खाड़ी—इसमें नर्बदा और तापती नदी गिरती हैं ॥

कच्छकीखाड़ी—यहखम्भातकीखाड़ी से ऊपरहै ॥

फ़ारस की खाड़ी—फ़ारस और अरबकेबीचमेंहै ॥

९ पाठ ॥

मुहानों के विषय में ।

बेगडज़ का मुहाना——नोवाज़ेम्ला द्वीप और एशिया के मध्य में है ॥

बहरिङ्ग का मुहाना— आमेरिका और एशिया के बीच में है जिस साहब ने पहिले पहिल इसमें जहाज़ चलाया उसका नाम बहरिङ्ग था ॥

तातारका मुहाना—सिंघालियन और तातार के बीचमें है ॥

कोरियाका मुहाना—कोरियाऔरजापानकेबीचमेंहै ॥

पाकम का सुहाना—लङ्का और दक्षिणी हिन्दु-स्तानके बीचमें जिसे विलाबा या मीनारभेकिहतेहैं॥

बाबुल्मन्दब—जो अरब और आफ़्रिका के बीच लालसागर का द्वार है॥

आर्मिस—फ़ारस की खाड़ी का द्वार जो फ़ारस और अरब के बीच में है॥

१० पाठ॥

नदियों का वर्णन॥

एशिया कुछ उत्तम नदियों के कारण पृथ्वी भर में सर्वोत्तम है॥

उत्तर—ओबी—यान्सी—लीना—बड़ी लम्बी चौड़ी नदियां आलटैन श्रेणी से निकलकर सैबेरियामें बह-कर उत्तर हिम समुद्र में गिरती हैं॥

पूर्व में—अमूर नदी आलटैन पहाड़ से निकल कर पूर्व ओर चीनीतातार में बह कर ओखाट्स्क समुद्र में गिरतीहै॥

होंगहो और यांगसीक्याङ्ग ये दोनों नदियां तिब्बत के पहाड़ से निकल कर चीन में बहकर पूर्वी समुद्र में गिरती हैं॥

दक्षिणमें—ऐरावती, ब्रह्मपुत्र, और सिन्ध, ये तीनों नदियां हिमालय पहाड़ के उत्तर से निक-लती हैं ऐरावती, ब्रह्मपुत्र, बङ्गाले के खालमें और सिन्ध अरब समुद्र में गिरती है॥

गङ्गा हिमालय पहाड़के दक्षिण ओर से निक-लती है और हरिद्वार से दक्षिण पूर्व ओर बहके

यमुना, गोमती, घाघरा, सोन, कोसी, इनके समेत और कईएक सहायक नदियों के साथ ब्रह्मपुत्र से मिलकर बङ्गाले के खाल में गिरती है यहां इसे पद्मा कहते हैं ॥

पश्चिममें—फ़ुरात—दजला—ये दोनों तारस पहाड़ से निकल के तुर्किस्तान के उस भागमें जिसे प्राचीन लोग अलमुलनहरेन कहते थे बहकर बसरा नगर से बीस कोस के पहिले मिलती है और फिर फ़ारस की खाड़ी में गिरती हैं ॥

११ पाठ ॥

द्वीपों का वर्णन ॥

उत्तर हिमसमुद्र में——नोवाज़ेमला ॥

स्थिर महासागर में—सिंघालियन, जापान के राज्य के उपद्वीप, जैस्सो, नेफ़न, किंसो, ल्यू क्यू केटापू फ़ारमोसा उपद्वीप, और हांग कांग उपद्वीप अंगरेज़ों के आधीनहैं—मकाओ उपद्वीप पोर्टगीज़ोंके आधीन है—और हैनान ये तीनों चीनके पूर्वी तटपर हैं ॥

हिन्द महासागर में——सिङ्गापुर, पीनाङ्ग, नेकोबार, अण्डमन, लङ्का, मालद्वीप, लाकाद्वीप ॥

भूमध्यस्थ सागर में—सनोवर, रोदस, ये दोनों बड़े सुन्दर उपद्वीप हैं ॥

१२ पाठ ॥

प्रधान नगरों का वर्णन ॥

ओबी नदी को सहायक अगतम नदीकेतटपर टोबालस्क नगर रूसकी राजधानी है ॥

बालगा नदी पर आस्ट्राखान नाम नगर है ॥

चीन की राजधानी पेकिन है जो पृथ्वी भर में अत्यन्त धनवान नगर कहा जाता है ॥

टांकिन——यह भी बड़ा नगर है ॥

कंटन——यहां पर चीनियों और यूरुप वालों के व्योपार की पहिले वाणिज्यकी मण्डी थी परन्तु अब कई स्थान और नियत हुये हैं ॥

नैफ़न उपद्वीप में ये दो नामी नगर जापान की राजधानी हैं ॥

श्याम में—मीनम नदी पर बेंकोक नगर है ॥

ब्रह्मा में—आवा नदी पर अमरपुर राजधानी है ॥

रंगून——बड़ा बन्दर है ॥

हिंदुस्तान में——कलकता नगर हुगली नदीके तट पर अब राजधानी है—मन्द्रास—कारोमण्डल के किनारे पर——बम्बई—बम्बई के उपद्वीपपर है ॥

अफ़ग़ानिस्तान में—काबुल, पेशावर, क़न्धार—फ़ारसमें—तेहरान राजधानी है इसफ़हान पहिले था ॥

शीराज़—अंगूर की मदिराके कारण प्रसिद्ध है ॥

अरब में——मक्का महम्मद की जन्मभूमि है और मदीना——उनकी समाधि का स्थान है—मस्कत—प्रसिद्ध बन्दर है ॥

रूम में——स्मर्ना, ब्रूसा, छोटे एशिया की सीमा में मिला है ॥

शाम में—हलब, दमिश्क़—विख्यात नगर हैं ॥

यहूदिया में—यहूदियों की राजधानी यरोशलिम है ॥

मेसोपोटेमियां के निकट ये तीन प्रसिद्ध नगर हैं॥ फ़ुरात नदीपर—बसरा बड़ी ब्यौपार की मण्डी है॥ बग़दाद—जो पूर्वकालमें ख़लीफ़ों की राजधानी था और मोसल—एक प्राचीन स्थान है॥

तिब्बत की राजाधानी——ब्रह्मपुत्र नदीपर लासा नगरहै॥

तातार में—समरक़न्द जो एक काल में विद्या के कारण प्रसिद्ध था॥

बुख़ारा——अमू नदी के पास है इसी नदी को अगले काल में आक्सस कहते थे॥

बलख़——जिसमें ज़र दुश्त उत्पन्न हुआ जिसने आग की पूजा प्रकट की॥

१३ पाठ॥

जातों के नाम और गुण का वर्णन।

रूस में बहुत जातें हैं उनमें विशेष करके बन्य हैं॥ रूममें थोड़ी जातें ऐसीही हैं॥ अबके लोग शूर-वीर और आतिथेय हैं परन्तु उनकी जीविका डकैती है॥ चीनी लोग परिश्रमी और चतुर हैं परन्तु बड़े अभिमानी, डरपोकने, छली, अविश्वासी हैं॥ तिब्बत के बासी भोले और जापक बुद्धो हैं॥ तातार के लोग बन्य हैं॥ फ़ारस के बासी रसिक, सुख भोगी, परन्तु कपटी और लोभी हैं॥ बंगाली, नम्र, बुद्धिमान और आज्ञाकारी हैं परन्तु अभिमानी, सुहलंग, डरपोकने, लोभी और अविश्वासी हैं॥ जापान के रहने वाले चीनियों के समान आधे

विद्यावान हैं॥ यहूदी अत्यन्त सूम और स्वार्थी हैं॥ अरमनी—सिंहल द्वीपी—कश्मीरी—नैपाली—सरकेशियस्थ—और जार्जियस्थ—शूरवीर और बड़े स्वरूपवान होते हैं॥ सिक्ख शूरवीर और अभिमानी हैं; मलाया के वासी साहसी, अभिमानी परंतु समुद्र की डकैती और निठुरता के कारण प्रसिद्ध हैं॥ अफ़ग़ान लोग योधा, बड़े आलसी हैं॥

१४ पाठ॥

धर्म और राज्य का वर्णन॥

अरब—तुर्क—फ़ारस—अफ़ग़ानिस्तान इनके वासी और मलाया, और बहुत से तातार के वासी मुहम्मद के मत पर चलते हैं॥

अरमनी किरस्तान हैं—यहूदी अबतक भी मूसा के मतपर चलते हैं॥

ब्रह्मा और श्याम के रहने वाले बौद्ध हैं, तिब्बत के लोग महालामा को पूजते हैं॥

चीनके लोग अपने ऋषि फ़ोह के समान बुध को मानते हैं उनमें थोड़े जो पढ़े लिखे हैं वे केवल परब्रह्म को मानते हैं॥

हिंदुस्तान के लोग बहुधा देव पूजक हैं॥

सैबेरिया के बासी भी विशेष करके देव पूजक हैं॥

अंगरेज़ी राज्य को छोड़ एशिया के सब राज्य स्वेच्छाचारी हैं वहां व्यवस्था होती है परन्तु वहां के राजा उन व्यवस्थाओं के आधीन नहीं हैं जब

उनको इच्छा होती है तब व्यवस्था से विपरीत करते हैं ॥

१५ पाठ ॥

दिशावर की प्रधान द्रव्यों का वर्णन ।

हिंदुस्तान से-नील, चीनी, चावल, रेशम, रुई और शोरा ये जाते हैं ॥

बङ्गाले और पंजाब से—नोन, जाता है ॥

मालवे से—अफ़ीम ॥

चीन से—चाह, रेशम, मखमल, मिश्री, हाथी-दांत, कछुए की पीठ के खिलौने, चीनी के बासन, कपूर, काग़ज़, मेवे के अचार ॥

अरब से—घोड़े और कहवा ॥

फ़ारस से—ग़लीचे, रेशम, अतर, मदिरा, ये सब पदार्थ जाते हैं ॥

रूम के—ग़लीचे, किशमिस, अंजीर, घोड़े, और चमड़ा प्रसिद्ध हैं ॥

सिङ्गलद्वीप से—हाथीदांत, आबनूस, मोती, दाल चीनी और नारियलका तेल आता है ॥

ब्रह्मा-आसाम-नैपाल से विशेष करके साखू का लट्ठा आता है ॥

मलाया का टीन प्रसिद्ध है ॥

तिब्बत में-बकरियों से ऊन उत्पन्न होती है उसी से कश्मीर में शाल रूमाल बनते हैं ॥

४१७ ८२

 ४४/३

पांचवां अध्याय ॥

हिंदुस्तान का वर्णन ॥

१ पाठ ।

ईश्वर कृत विभागों का वर्णन ॥

हिंदुस्तान-जिसे भारतखण्ड भी कहते हैं एशिया के दक्षिण ओर है इसके उत्तर-हिमालय पहाड़ पूर्वमें-ब्रह्मा, बङ्गाले का आखात दक्षिण में हिन्द का महासागर, पश्चिम में-अरब समुद्र, सुलेमान पहाड़ है और विस्तार इसका १४००००० वर्गात्मक मील, है-मनुष्य लगभग १८००००००० के हैं ॥

हिंदुस्तान में-ये पहाड़ हैं अरवली, विंध्याचल, नीलगिरी ॥

पूर्वी तटपर ये नदियां हैं——महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी ॥

पश्चिम में——नर्बदा, ताप्ती हैं ॥

वायुकोण में——सिन्ध और उसकी पांच सहायक नदियां हैं जिनके कारण पंजाब देश कहलाता है सिन्ध से लगातार नाम येहैं——झीलम, चिनाब, रावी, ब्यासा, सतलज ॥

बङ्गाले में गङ्गाके दो सोते भागीरथी, झिलंगी नाम से प्रसिद्ध हैं——गङ्गा और ब्रह्मपुत्र से जो संगम होता है उसे मेगना कहते हैं ॥

हिंदुस्तानके स्वाभाविक ३ भाग हैं ॥

१ पहाड़ी हिंदुस्तान अर्थात वह देश जो

हिमालय और कमाऊं के मध्य में है कश्मीर, कमाऊं, नैपाल भोटान, हैं ॥

दूसरा उत्तरीय हिंदुस्तान अर्थात् वह भागजो कमाऊं पहाड़ इत्यादि और नर्बदा नदीके मध्यमें है ॥

तीसरा दक्षिण अर्थात् वह भाग जो हिंदुस्तान के दक्षिण ओर है ॥

२ पाठ ॥

राज्यके अनुसार हिंदुस्तान का विभाग ॥

राज्य के अनुसार हिंदुस्तान के चार भाग हैं ॥

१—राज्य—सर्कार अंगरेज़ बहादुर का ॥

२—उन हिंदुस्तानी राजाओं का राज्य जो सर्कार से रक्षित है ॥

३—स्वतंत्र राजाओं का राज्य ॥

४—दूसरे यूरुप वालों का राज्य ॥

३ पाठ ॥

सर्कारी राज्य का वर्णन ॥

सर्कारी राज्य तीन हातों में बांटा गया है ॥

बङ्गाल हाता—मन्दरास हाता—बम्बई हाता ॥

बङ्गाल हाता—तीनों हातोंमें बड़ा है ॥

बङ्गालके आखात से सिन्ध नदी तक उसकी सीमा है लफ्टिनेण्ट गवर्नरी बङ्गाल औ लफ्टिनेण्ट गवर्नरी पश्चिमोत्तरीय देश औ पंजाब और चीफ़-कमिश्नरी अवध औ मध्यदेश और कच्छ—आसाम का भाग—आराकान—मर्तबान—पैगू—पीनांग—सिंगापूर—इस में संयुक्त हैं ॥

मन्द्रासहातेमें—प्रायद्वीप दक्षिणअर्थात् कृष्णा नदी से सबदक्षिणी भाग और बम्बई में हिन्दुस्तान का सब पश्चिमी भाग संयुक्त है ॥

बङ्गालहाते में——ये प्रदेश हैं ॥

१ बङ्गाल २ बिहार ३ बनारस ४ इलाहाबाद ५ अवध ६ आगरा ७ रुहेलखण्ड ८ देहली ९ कमाऊं १० पंजाब ११ अजमेर १२ नागपुर १३ उड़ीसा, प्रत्येक प्रदेशों के मुख्य नगर ये हैं ॥

१——कलकत्ता—ढाका—मुर्शिदाबाद—पलासी ॥

२——पटना या अज़ीमाबाद—गया—मुंगेर ॥

३——बनारस अर्थात् काशी—मिर्ज़ापुर ॥

४——इलाहाबाद अर्थात् प्रयाग—कानपुर ॥

५—— लखनऊ—फ़ैज़ाबाद ॥

६——आगरा—क़न्नौज—मथुरा ॥

७——बरेली ॥

८——देहली—मेरठ—हरिद्वार—सरहिन्द ॥

९——अलमोड़ा ॥

१०——लाहौर—अमृतसर ॥

११——अजमेर ॥

१२——नागपुर ॥

१३——कटक——जगन्नाथ ॥

मन्द्रास हाते के प्रसिद्ध ये प्रदेश हैं ॥

१ करनाटक २ सर्कार ३ कार्यंविटूर ४ मलावार ५ कनारा ॥

प्रत्येक प्रदेशों के मुख्य नगर ॥

१——मन्द्रास-अरकट-तान्जूर-ट्रिचिनापोली-मथुरा ॥

२——मछलीपट्टन ३—कायंबटूर ४ कालीकट-कनावर ५——मंगलौर ॥

३——बम्बई हाते के प्रसिद्ध प्रदेश ॥

१—उतरी और दक्षिणी कान कान—२ पूना—३ बीजापूर—४ खान देश का भाग——५ गुजरात का भाग—६ सिन्ध ॥

प्रत्येक प्रदेशों के मुख्य नगर ॥

१—बम्बई—सूरत—२ पूना—३ सितारा—४ मलो गांव ॥

१—कलकत्ता—हुगली नदी पर हिन्दुस्तान की राजधानी है और एशिया में प्रथम नगर है ॥

२——मुर्शिदाबाद—मुगलों के समय में बङ्गाले की राजधानी थी ॥

३——पलासी—यहां क्लाइव साहब ने सिराजुद्दौला बंगाले के नव्वाब को परास्त किया ॥

४—गया—हिंदू और बौद्धमतवालों का पवित्र स्थान है ॥

५—आगरा—ताजमहलके रौज़ेके कारणप्रसिद्ध है ॥

६—अमृतसर—सिक्खों का पवित्र स्थान है ॥

०——बनारस——इलाहाबाद——अयोध्या——हरिद्वार——मथुरा——जगन्नाथ—— ये हिंदुओं के बड़े विख्यात पवित्र स्थान हैं ॥

——

४ पाठ ॥

रक्षित राज्यों का वर्णन ॥

इसमें हिंदू राजाओं और नव्वाबों के मुख्य २ राज्य ये हैं ॥

१—हैदराबाद निज़ाम का राज्य ॥

२—मैसूर ॥

३—कोचीन ॥

४—ट्रावनकोर—५ इन्दौर हुल्कर का राज्य ॥

६—ग्वालियर—सेंधिया का राज्य—७ भूपाल ॥

८—गुजरात—गायकवार का राज्य ॥

९—कच्छ १० राजपूताना ११ भावलपूर १२ सिक्कम ॥

प्रत्येक के मुख्य नगर ॥

१—हैदराबाद—औरङ्गाबाद—दौलताबाद—असाई ॥

२—श्रीरंगपट्टन—बंगलोर ॥

३—कोचीन—४ त्रावंड्रम—५ इन्दौर—६ ग्वालियर—उज्जैन—७ भूपाल—८ बरोदा—खंभात—९ भोज १० उदयपुर—जोधपुर—बीकानेर—११ भावलपुर—१२ तिमिलिंग ॥

दौलताबाद—जो देवगढ़ के नाम से विख्यात था जिसको अलफ़ख़ां मुहम्मद तुगलक़ ने देहली उजाड़ कर बसाना चाहा था ॥

असाई—यहां आर्थर्विल्जली साहब बहादुर ने बड़ी विजय की ॥

श्रीरंगपट्टन—कावेरी नदीपर हैदर और टीपू की राजधानी था ॥

उज्जैन—यहां विक्रमादित्य की राजधानी थी हिंदू यहीं से देशांश लेते थे ॥

बरौदा—खंबात—यहां पहिले पहिल अंगरेज़ों ने अपनी कोठियां प्रचलित कीं ॥

५ पाठ ॥

स्वतंत्र राजाओं का वर्णन ॥

प्रथम हिंदुस्तानी राज्य इसमें तीन राज्य हैं ॥

१—कश्मीर—राजधानी श्री नगर ॥

२—नैपाल—राजधानी कटमांडो ॥

३—भोटान—राजधानी नामासूदन ॥

दूसरे यूरुप वालों का राज्य ॥

मन्द्रास के नीचे पांडेचरी—इसके नीचे समुद्र के तटपर करीकाल—मलाबार के तट पर माही फ्रान्स के आधीन है ॥

गोआ—मलाबार के तट पर—डामन—सूरत के निकट ॥

डेव—गुजरात के नीचे पुर्टगीज़ों के आधीन है ॥

६ पाठ ॥

अवध का वर्णन ॥

अवध का प्रमाण २४००० बर्गात्मक मील है मनुष्य ३०००००० के लग भग बस्ते हैं ॥

इसमें ४ विभाग हैं और प्रत्येक विभाग एक २ साहब कमिश्नर के आधीन है ॥

१—लखनऊ—२ ख़ैराबाद—३ फ़ैज़ाबाद—४बैसवाड़ा प्रत्येक भाग के तीन २ विभाग हैं ॥

१--लखनऊ--२ दरियाबाद मुख्य स्थान (नव्वाब गंज)-३ उन्नाव ॥

२--सीतापूर--मुहम्मदी--मुख्य स्थान (खीरी) हरदोई ॥

३--फ़ैज़ाबाद--गोंडा--बहिरायच ॥

४--रायबरेली--सुल्तानपुर--परतापगढ़ मुख्य स्थान (बेल्हा) ॥

इसके प्रसिद्ध स्थान ये हैं ॥

लखनऊ--यहां जनाब साहब चीफ़कमिश्नर बहादुर और अन्य प्रधान हाकिम रहते हैं ॥

अयोध्या--नीमषारमिश्रिष--गोलागोकरननाथ ये तीन हिन्दुओं के बड़े पूर्व के स्थान हैं ॥

डलमऊ--गङ्गानदीकेकारण पवित्रगिनाजाताहै ॥

टांडा--कपड़े के कारण प्रसिद्ध है ॥

मलिहाबाद--आम के कारण प्रसिद्ध है ॥

बिसवां--तमाकू के कारण प्रसिद्ध है ॥

बिलग्राम--विद्या के कारण प्रसिद्ध है ॥

फ़ैज़ाबाद--सन्दूक़चों के कारण--गोंडा--बेत के पिटारों के कारण--बहिरायच--नमदों और लोहे की चीज़ों के कारण--जायस--घोतर इत्यादि कपड़ों के कारण--हसनपुरबंधुआ--फूल के बर्त्तनों के कारण प्रसिद्ध है ॥

बलरामपुर--महाराजाबलरामपुरकीराजधानीहै

शाहगंज--महाराजामानसिंह क़ायमजंगबहादुर की राजधानी है ॥

छठवां अध्याय ॥

यूरुप के विषय में ॥

१ पाठ ॥

देशों का वर्णन ॥

१—यूरुप की चारों सीमा यह हैं—उत्तर में उत्तर हिम सागर—पश्चिम में ऐटलांटिक महासागर—दक्षिण में भूमध्यस्थ समुद्र पूर्व में एशिया ॥

२—यूरुप के मुख्य देश यह हैं ॥

उत्तर में यूरुपी रूस—स्वीडन—और नारवे का संयुक्त राज्य—डेनमार्क—ग्रेटवृटिन और अयर्लैण्ड का संयुक्त राज्य ॥

मध्यमें—फ्रांस—बेलजियम—हालैण्ड—प्रुशिया-जर्मनी—स्विटज़रलैण्ड—आस्ट्रेरिया—दक्षिण में स्पेन पोर्तुगाल—इटली—तुर्किस्तान अर्थात् यूरुपी टर्की यूनान ॥

२ पाठ ॥

प्रसिद्ध प्रदेशों का वर्णन ॥

रूस में इतने विभाग हैं—मुख्य रूस—लापलैण्ड फिनलैण्ड—पोलैण्ड का भाग ॥

पोलैण्ड का देश पहले यूरुप के राज्य में था परन्तु सन् १७९५ ई० में रूस और प्रुशिया और आस्ट्रेरिया वालों ने मिलकर विजय करके आपस में बांट लिया ॥

२—उत्तर में स्काटलैण्ड का राज्य—दक्षिण में इङ्गलैण्ड का राज्य इङ्गलैण्ड के पश्चिम वेल्ज़

ये तीनों मिलकर ग्रेटबृटिन कहलाते हैं—और अयलैंण्ड द्वीप और इनके चारों ओर के छोटे २ उप-द्वीप ये सब मिलकर ग्रेटबृटिन और अयलैंण्ड के संयुक्त राज्य को बनाते हैं ॥

३—जर्मनी देश में ३५ छोटे२ स्वाधीन राज्य हैं जो परस्पर की सहायता के लिये मिले हुये हैं सन् १८६६ ई० में प्रुशिया वालों ने वहुत सा देश विजय करके अपने आधीन कर लिया ॥

४—आस्ट्रेरिया में मुख्य आस्ट्रेरिया—बोहेमियां अर्थात् जर्मनी के विभाग—मोरेविया—हङ्गरी—गलेशियां अर्थात् पोलेण्ड का भाग—लम्बार्डी—टूईरोल ॥

५—इटली में—सार्डिनिया—पारमा—लूका मोडोना-टस्कनी—फ्लारेन्स—पोपकाराज्य-नेपिल्स ॥

सार्डिनियामें—सार्डिनियां—पीडमंट—जनेवा—सेवाय—मिलानका भाग और सार्डिनियाका द्वीप ॥

नेपिल्स—इटली के दक्षिण में है और सिसली नाम द्वीप भी उसमें संयुक्त है ॥

६—यूरुप में सबसे अनूठे प्रदेश ये हैं—यूनान जहां के प्राचीन पण्डित और बुद्धिमान प्रसिद्ध हैं ॥

स्विटज़रलेण्ड—के ऊंचे २ पर्व्वत और निवासी शूर बीर और छल रहित हैं ॥

हालेण्ड देश समुद्र से नीचा है परन्तु वहां डच नाम वासी जिनका बड़ा परिश्रम प्रसिद्ध है उन्होंने समुद्र के जलसे ऊंचे बांध बांधे हैं ॥

पूर्व कालमें रूमके महाराज्य का इटली प्राय-

द्वीप बड़ा प्रशंसनीय स्थान था सीज़र के समय में इङ्गलेण्ड और फ्रान्स के लोग असभ्य और मूर्ख थे परन्तु अब पृथ्वी भर में सबसे बड़े विद्यामान और शूरवीर हैं और इङ्गलेंड की जहाज़ी सेना पृथ्वी भरमें सबसे पराक्रमी है ॥

३ पाठ ॥

प्रायद्वीप के विषय में ॥

नारवे और स्वीडन प्रायद्वीप जो पूर्वकाल में स्कंडेनेविया कहे जाते थे—डेनमार्क में—जटलेण्ड प्रायद्वीप ॥

प्रायद्वीपस्पेन और पोर्तुगाल—भूमध्यस्थ और एटलांटिक के मध्य में हैं ॥

प्रायद्वीप इटली—भूमध्यस्थ में है इसका आकार मोज़े कासा है ॥

मोरिया प्रायद्वीप—यूनान का एक भाग है ॥

क्रिमिया प्रायद्वीप—काले सागर में है ॥

४ पाठ ॥

अन्तरीप और उनके मध्य का वर्णन ॥

यूरुप में ये अन्तरीप हैं—उत्तर अन्तरीप—आर्टकिल—फिनिस्टर—रूका—सेण्टविन्सेण्ट—ट्राफिल्गार—स्पार्टीवेण्टो—मैटेपान ॥

उत्तर अन्तरीप—यूरुप की उत्तरीय नोक है ॥

आर्टकिल—स्पेन की उत्तरीय नोक है ॥

फिनिस्टर—स्पेन के वायव्य कोण में है ॥

रूका—पोर्तुगाल की पश्चिमी नोक है ॥

सेण्टविन्सेण्ट—पोर्तुगाल में रूका से नीचे है ॥

ट्राफ़लगार—स्पेन की दक्षिणी नोक है ॥

स्पार्टीवेण्टो—इटली की दक्षिणी नोक है ॥

मैटेपान—मोरिया की दक्षिणी नोक है ॥

ग्रेटबृटिन और अयरलेण्ड में ये अन्तरीप हैं ॥

राथ—उत्तरी फोर्लैण्ड—दक्षिणी फोर्लैण्ड—क्लि-यर—लिज़ॅर्डपइण्ट—लेंडज़ऐण्ट ॥

राथ अन्तरीप—स्काटलेण्ड की उत्तरीय नोक है ॥

उत्तरी फोर्लैण्ड—दक्षिणी फोर्लैण्ड—इङ्गलेण्ड के पूर्वी तट पर हैं ॥

क्लियर—अयरलेण्ड के दक्षिणी तट पर है ॥

लिजर्डपइण्ट—इङ्गलेण्ड के नैऋत्य कोणमें है ॥

लेण्डज़ऐण्ड—लिज़र्डपइण्ट के ऊपर है ॥

२—डमरू मध्य कारिंथ—मोरिया को यूरुप से मिलाता है ॥

परीकाव—क्रीमिया को रूस से मिलाता है ॥

५ पाठ ॥

पर्व्वतों का वर्णन ॥

यूरुप के बड़े पर्वतों की ये श्रेणी हैं—डाफ़रा-फ़ील्ड—पैरेनीज़—आल्पस—ऐपेनइन—अर्ज़जीवर्ग—स्यूडेटिक—कार्पैथियन—बल्कान—यूराल—ग्रेमपि-यन—चिविअट ॥

डाफराफील्ड—स्कॅंडेनेविया में उत्तर से दक्षिण तक चला गया है ॥

पैरेनीज़—फ्रान्स और स्पेन को जुदा करता है ॥

आल्पस—इटली को फ्रान्स—जर्मनी—स्विटज़रलेंड से जुदा करता है उसकी सबसे ऊंची चोटी ब्लैंक है ॥

इटली में ऐपेनइन पर्वत उत्तर से दक्षिण को चला गया है ॥

अर्ज़गोवर्ग—ल्यूडेटिक—बोहेमियां को उत्तर और पूर्व से घेरे हुये है ॥

कार्पेथियन—हंगरीकेईशानकोणकीसीमापरहै ॥

बल्कान—यूरुपी टरकी में है ॥

यूराल—यूरुपी और एशियायी रूसकेमध्यमें है ॥

ग्रेमपियन—स्काटलेण्ड में है ॥

चिवियट—इङ्गलेण्ड औरस्काटलेण्डकेमध्यमें है ॥

इनके सिवाय अलग २ पर्वत भी हैं ॥

विस्यूवियस नाम ज्वालामुखी नेपिल्स में है ॥

स्पेनमें-बारसीलोना नगरके निकट मांटसेरट पहाड़ी इस कारण विख्यात है कि वहां तपस्वी रहते हैं ॥

स्काटलेण्ड में बेनेवियस और वेलस में स्नोडन और इङ्गलेण्ड में स्काफ़िल—हूलिन-स्किडा हैं ॥

६ पाठ ॥

झीलोंका वर्णन ।

रूसमें लडोगा—ओनीगा—स्वीडन मे वेनर—वेटर—मिलार ॥

इङ्गलेण्ड में—केस्विक-याडवेंण्ट वाटर ॥

स्काटलेण्ड में—लोमांडा ॥

अयरलेण्ड में—किलरनी ॥

स्विटज़रलेण्डमें कांस्टेन्स—जनेवा ॥

इटली में कोमो—मैग्यूर हैं ॥

स्विटज़रलेण्ड-इटली—स्काटलेण्ड—अयरलेण्ड और इङ्गलेण्ड इनकी झीलें सुन्दरता के कारण प्रसिद्ध हैं॥

७ पाठ॥

समुद्रों का वर्णन॥

उत्तर महासागर का भाग स्वेत समुद्र है ॥

ऐटलांटिकके भाग ये हैं—बाल्टिक समुद्र-उत्तरी समुद्र या जर्मन—बिसके का खाल ॥

बाल्टिक—रूस और स्कैंडेनेविया के मध्य में है॥

उत्तरी समुद्र या जर्मन-जटलेण्ड और ग्रेटब्रटिन के बीच में है ॥

बिस्केका खाल-फ्रांस और स्पेन के बीचमें है॥

भूमध्यस्थ सागर के भाग ये हैं-मारमोरा समुद्र-काला सागर ॥

मारमोरा समुद्र—एशियायीटर्की और यूरुपी टर्की के बीच में है ॥

काला सागर-एशिया मैनर और यूरुपी रूसके बीच में है ॥

८ पाठ ॥

खाड़ियों का वर्णन ॥

उत्तर हिमसागरमें स्वेत समुद्रकी ये खाड़ियां हैं॥

आकेन्जल-केण्डलाक्स—चसकिया—बारेंजरका नाका ॥

बालटिक समुद्र में ये खाड़ियां हैं—फिन्लेण्ड—बोथिनियां——रिगा ॥

भूमध्यस्थ में ये खाड़ियां हैं—लायन्स—जनेवा—वेनिस——टारिंटो——कारिन्थ ॥

लायन्स——की खाड़ी फ्रान्स के दक्षिण है ॥

जनेवा——की खाड़ी सार्डिनियां के दक्षिण है ॥

वेनिस—की खाड़ी जिसे ऐड्रियाटिकभी कहते हैं इटली और तुर्किस्तान के मध्य में है ॥

टारिण्टो——की खाड़ी इटली के दक्षिण है ॥

कारिंथ——की खाड़ी यूनान में चली गई है ॥

६ पाठ ॥

नालें और मुहानों का वर्णन ॥

ऐटलाण्टिक में ये नालें और मुहाने हैं ॥

ऐरिश या सेण्टजार्जका नाला—अङ्गरेज़ी नाला—सौंड का मुहाना——स्केजरेक—कैटेगाट—डोवर का मुहाना ॥

ऐरिश या सेण्टजार्ज का नाला—इङ्गलैण्ड और अयरलैण्ड के बीच में है ॥

अङ्गरेज़ीनाला इङ्गलेण्ड और फ्रान्सकेबीचमें है॥

सौंडकामुहाना—ज़ीलैण्डऔरस्वीडनकेबीचमेंहै॥

स्केजेरक और कैटेगाट——दोनाले बाल्टिक समुद्र में है ॥

डोवर का मुहाना—डोवर नगर और किलियर नगर के बीच में है ॥

पहिला नगर इङ्गलिस्तान के तट पर दूसरा फ्रांस के तट पर है ॥

भूमध्यस्थ के ये मुहाने हैं—जिबराल्टर—बोनीफेसिओ—मेसीना—क़ुस्तुन्तुनियां—काफ़ा ॥

जिबराल्टर का मुहाना—नस्पे और आफ्रिका के बीच में है ॥

बोनीफेसिओ का मुहाना—उपद्वीप सार्डिनियां और कारसिका के बीच में है ॥

मेसीना का मुहाना—सिसिली और इटली के बीच में है ॥

क़ुस्तुन्तुनियां का मुहाना—मारमोरा को काला सागर से मिलाता है ॥

काफ़ा का मुहाना—काला सागर को अज़फ़ से मिलाता है ॥

१० पाठ ॥

उपद्वीपों का वर्णन ॥

स्पिटिज़बर्गन उपद्वीप उत्तर महासागर में है ॥

नार्वे के पश्चिमी तट पर लाफ़ोडन है ॥

बालटिक समुद्र में ईमल—डागू—आलेएड—गाथलेएड—ओलेएड—ज़ीलेएड—फूनन हैं ॥

ऐटलांटिक महासागर में—फेरो—ऐसलेंएड—ग्रेटवृटिन के और पासके उपद्वीप येहैं—हैब्रेडीज़—आर्कनी—शटलेएड—बाइट—मेन—इङ्गलसी फ्रान्स के तट पर—जरसी—गर्न्सी—अलडरनी भूमध्यस्थ में बेलेरिक उपद्वीप अर्थात् अबीका—

मजारका—मीनारका—मार्डिनिया—कार्सिका—ऐल्ब—सिसिली—लैपरी—माल्टा—अयोनियन उपद्वीप अर्थात् कार्फू—फेलोनियां—ज़ाएटो आदि—काण्डिया—नीग्रोपांट हैं॥

ईसल—डाग—एलेंड—रूसके आधीन हैं॥

गाथलेंड—ओलेंड—स्वीडनके और ज़ीलेण्ड—फूनन—फेरो—ऐसलेण्ड—डेनमार्क के आधीन हैं॥ ओर्कनी—सटलेंड उपद्वीप—स्काटलेंड के उत्तर हैं॥

हैब्रेडीज़ इसके पश्चिमी तटपर—वइट अंगरेज़ीनाले में—मैन अयरिश नाले में—जरसी—ग्रन्सी—अलडरनी फ्रान्स के तटपर—सिली लेंडस एण्ड अन्तरीप के निकट—इङ्गिलसी ऐरिश—मुहाना में वेलस से मिला है—माल्टा भूमध्यस्थ में सिसिली उपद्वीप के नीचे ये सब ग्रेटब्रिटिन के आधीन हैं—माल्टा की धरती पथरीली है—ज़िब्रालियार्क—स्पेन के आधीन है॥

सार्डिनिया उपद्वीप सार्डिया के आधीन है॥

कार्सिका—जहां नपोलियन उत्पन्न हुआ था फ्रान्स के आधीन है॥

इल्वा—जहां उसने पहले फ्रान्स का अधिकार छोड़कर राज्य किया टस्कानी के आधीन है॥

लिपरी—सिसिली के उत्तर नेपिल्स के आधीन है—इनमें कई एक उपद्वीप ज्वालामुखी हैं॥

अयोनियन उपद्वीप में ७ उपद्वीप हैं॥

काफ़ूर्य राजधानी है—ज़ेण्ट—सिफेलोनियां ग्रेटवृ-
टिन से रक्षित है ॥

कांडिया—नीग्रोपाण्ट और बहुत से छोटे २
उपद्वीपओं पैलेगो भूमध्यस्थ कहलाते हैं इनमें
कुछ तो टर्कों के आधीन और कुछ यूनान के ॥

११ पाठ ॥

नदियों के विषयमें ॥

यूरुप की नदियां स्वेत सागर से लेकर यूरुप के
आस पास इस क्रमसे हैं उत्तरी ड्वीना—विश्चूला—
एलब—रायन—मोज़—शेल्ड—सीन—लायर—ग्रोन—
डोरोटेगस—एब्रो—रोन—टेबर—पो—डेन्यूब—नी-
पर—डान—वालगा ॥

ग्रेटब्रिटिन की नदियों का स्काटलेण्ड के उत्तर
से यह क्रम है—हिम्बर—ट्रण्ट—डवेंण्ट—टी—
ट्वीड—इसस—टेम्स ॥

अयरलेण्ड में शेनान् है ॥

रूस में ड्वीनानदी बलगडा पहाड़ के निकट से
निकल के स्वेत सागर में गिरती है ॥

वालगा—डान—नीपर रूस के मध्यमें एक दूसरे
के निकट से निकलती हैं वालगा—आस्ट्राखान नगर
के निकट कास्पियन सागर में और डान—अज़फ़
नगर के निकट ऐज़ाफ़ समुद्र में और नीपर—रूस
में होकर काला सागर में गिरती है वालगा यूरुप
में सब नदियों से बड़ी है ॥

आस्ट्रेरिया में डेन्यूब—जर्मनी के पूर्व ओर

दक्षिणी और पूर्वी भाग बवेरिया और आस्टरिया में होकर हंगरी के दक्षिण और पूर्व ओर टर्की में होकर पांच दहानों से काले सागर में गिरती है इस बड़ी नदी पर प्रसिद्ध नगर ये हैं ॥

बवेरिया में—राटिसबन—बिएना—प्रेसबर्ग—व्यूडा• दो नगर हंगरी में और बिलग्रेड टर्की में है ॥

पोलेण्ड में विश्चुला नदी क्रैपक पहाड़ से निकल कर डेंज़िक की खाड़ी में जो बाल्टिक का भाग है गिरती है इस पर—वारसा—थार्न—डेंज़िक प्रसिद्ध नगर हैं ॥

जर्मनी में एल्ब-बोहेमियां के पहाड़ों से निकलकर जर्मनमें होकर जर्मन समुद्रमें गिरती है इस पर——ड्रेसडन——हेम्बर्ग प्रसिद्ध नगर हैं ॥

बेल्जियम में शेल—फ्रांस से निकल कर आंटूर्प से बहकर जर्मन समुद्र में गिरती है—मीज़ नदी फ्रांसमें डूना प्रदेशके निकट पहाड़ से निकल कर बेलजियममें होकर फिर पश्चिम ओर झुकके जर्मन समुद्र में गिरती है इस पर लीज़ नगरहै ॥

जर्मन में रायन स्विटज़रलेण्ड के आल्पस पर्वत से निकलकर कांस्टेन्स झील में होकर वायु कोण की ओर से जर्मन और हालेण्ड के मध्य बहकर जर्मन समुद्र में टेम्स के दहाने के सन्मुख गिरती है ॥

स्ट्रासबर्ग जहां बड़ी घड़ी और बड़ा मीनार है डरमस मेन्त्स—कोन—लीडन—इसके तट पर हैं ॥

फ्रांस में लायर—लेंवे डाकुम पहाड़ से निकल

कर फिर नेंटीज़ के नीचे २ बहकर आटलांटिक में गिरती है इसके तटपर नेंटीज़ —— आरलियन्स मुख्य नगर हैं —— रोन आल्पस से निकल फ्रांस में होकर दक्षिण बहकर लायेन्सकी खाड़ी में गिरती है इस पर लायेन्स —— न्यान प्रसिद्ध नगर हैं ॥

स्पेन में टेगस नदी नैऋत्य कोण में बह कर लिसवन नगर के नीचे आटलांटिक महासागर में गिरती है —— लिसबन और टोलीडो टेगस पर और मैड्रिड उसकी सहायक पर है ॥

ईब्रो नदी —— आस्टेरिया के पहाड़ों से निकल कर नैऋत्य कोण में बहकर भूमध्यस्थ सागर में गिरती है ॥

डोरो —— नदी काष्टलेन पहाड़ों से निकलकर पश्चिम ओर बहकर ओपोर्टो नगर के निकट एट- लांटिक में गिरती है ॥

इटली में पो नदी—सेवाय के आल्पस से निकल कर पूर्व ओर बहकर एेड्रियेटिक समुद्रमेंगिरतीहै ॥

थ्यूरिन—फरारा—एेड्रियेटिक नगर उस पर हैं ॥

टेवर नदी—एपेनइन से निकल कर दक्षिण ओर बहकर भूमध्यस्थ सागरमें गिरतीहै इसके तट पर रोम नगर इसके दहाने से १०कोस के लगभग दूर है ॥

इङ्गलिस्तान में टेमस नदी—टेम और एसिसके सङ्गम से बनी और नैऋत्य कोण में बहकर जर्मन समुद्र में गिरती है इसके प्रधान नगर लण्डन— विण्डसर —— आक्स फोर्ड हैं ॥

ट्रेन्ट—ऊस——ओर डर्वेनट के संगम में हम्बर उत्पन्न होती है—याकंशियर—लिंकन-शियर के मध्य होकर जर्मन समुद्र में गिरती है ॥

स्काटलेण्डमें——टो नदी——ग्रेम्पियन पहाड़ से निकलकर जर्मन समुद्र में गिरती है ॥

ट्वीड नदी——लेन के प्रदेश से निकल कर इङ्ग-लेण्ड और स्काटलेण्ड में होकर जर्मन समुद्र में गिरती है वूक नगर इसके तट पर है ॥

अयरलेण्ड में शेनाननदी——ऐलेनझील जो अयरलेण्ड के उत्तर पश्चिम में है उससे निकलकर फिर बहुतसी झीलों में होकर ऐटलांटिक समुद्र में गिरती है इसके तट पर लेमेरिका नगर है ॥

१२ पाठ ॥

प्रधान नगरों का वर्णन ॥

नीवा नदीपर——रूसकी राजधानी——सेण्ट-पिटर्सवर्ग है ॥

प्राचीन राजधानी मास्को——पोलेंड की राज-धानी वार्सा है ॥

स्वीडन और नारवे की राजधानी स्टाकहालम मिलार झील में सात उपद्वीपों पर बड़ी सुन्दरताई से बना है——क्रिश्चियानियां नारवे का मुख्यनगर क्रिश्चियानियां फायर्ड पर है वर्गन इसके पश्चिम तट पर बन्दर है ॥

कोपिन हेगिन ज़ीलेंड उपद्वीप पर डेन्मार्क की राजधानी है—अल्वर्ग बन्दर है ॥

ग्रेटब्रिटिन और अयरलेंड की राजधानी-इङ्ग्लेंड में टेमस नदी पर लंडन नगर है जो पृथ्वी भर में पहले दर्जे का प्रसिद्ध नगर है ॥

स्काटलेंड की राजधानी——फोर्थ के नाकेपर एडिनबर्ग है और अपने विद्यालय के कारणप्रसिद्ध है मुख्यकर उसमें वैद्यक विद्या पढ़ाई जाती है ॥

अयरलेंडकी राजधानी—डबलिनलिफी नदीपर है ॥

इङ्ग्लेंड में लिवरपोल—मरसी नदी पर—ब्रेस्टल आवा नदी पर ये दोनों वाणिज्य के कारण प्रसिद्ध हैं——मांचेष्टर—— बरमिंघम—— शेफील्ड—स्काटलेंड में—गिलासगोहस्तकृतकामोंकेकारण प्रसिद्ध है ॥

इङ्ग्लेंड में—एसिसनदी पर—आक्सफ़ोर्ड और केम नदी पर—केम्ब्रज ये दोनों विद्या के प्राचीन प्रसिद्ध स्थान हैं ॥

शीन नदी पर—पेरिस फ्रान्स की राजधानी है ॥

रोन नदी पर—लायन्स नगर है और रेशमी वस्तु बनाने के कारण प्रसिद्ध है ॥

बोर्डो नगर——गीन नदी पर तीसरे दर्जे का बड़े वाणिज्य का स्थान है ॥

नैंटीज़ नगर—ब्रांडी मदिरा के कारण प्रसिद्ध है ॥

लायन्स के आखात में——मार्सेल नगर बड़े वाणिज्य का स्थान है ॥

ब्रेष्ट——चरबर्ग——टोलोन——ये तीनों बन्दर हैं और जहाज़ी फ़ौज इनमें रहते हैं ॥

बेलज़ियम की राजधानी—ब्रसेल्स जो मोज़ नदी के सोते पर है ॥

अंटूर्प—शेल्ट नदी पर क़िलेबन्द नगर है—इसी नदी पर—घेएट नगर है ॥

हालेएड की राजधानी—आमस्टरडाम—आमस्टर नदी परहै यह नगर यूरुपमें लंडन सेदूसरे दरजे में बड़ा वाणिज्य का स्थान है ॥

राटरडाम—मोज़ नदी पर है ॥

हार्लेम नगर—जहां पहिले पहिल सीसेके छापे की कल बनाई गई ॥

लीडन—बड़ा विद्यालय है ॥

प्रुशिया की राजधानी—बर्लिन स्प्री नदी पर है ॥

डांज़िक—विश्चूलाके दहाने परहै और मीलम—बाल्टिक के तट पर है ये दोनों नगर पोलेंडसे नाज लेजाने के कारण प्रसिद्ध हैं ॥

जर्मनीके नगर उन भागोंको छोड़कर जो प्रुशिया आस्ट्रिया—डेन्मार्क के आधीन हैं ये हैं सेक्सनी की राजधानी—एल्ब नदीपर ड्रेसडन है—लिप-ज़िक भी सेक्सनी में मेले के कारण प्रसिद्ध है ॥

हैनोवर—हैनोवर की राजधानी है ॥

हैम्बर्ग—एल्बनदी पर ल्यूबिक—फ्रेंकफोर्टमेन नदी पर—ब्रमिन—ये चार नगर स्वाधीन हैं और अपनीही व्यवस्था और विचार पर चलते हैं ॥

स्विटज़रलेएड में—बर्नआरनदी पर—जेनेवा एक प्राचीन और प्रसिद्ध झील जेनेवा पर—ज्यूरिक—

ल्यूज़र्न नगर अपने २ नाम की झीलों पर हैं ॥

आस्टेरिया की राजधानी—विएना—डेन्यूब नदी पर—मिलान इटली के उस भाग की राजधानी है जो आस्टेरियाके आधीन है—वेनिस एडियेटिक समुद्र पर एक समय यूरुप में वाणिज्य के कारण सब से अधिक प्रसिद्ध था—हंगरी में-प्रेसबर्ग——ब्यूडा ये दोनों नगर डेन्यूब नदी पर——क्राको-विश्चूलानदी पर पोलेंड का नगर है ॥

स्पेन की राजधानी मैड्रिड—मेंज़नेरीज़ नदी पर है——टोलीडोटेगस नदी पर—सलेमानका एक समय में विद्याके कारण प्रसिद्ध था—कांडिज़ आटलांटिकमें बड़ा बन्दर है ॥

जिबराल्टर क़िलाबन्द नगर अङ्गरेज़ोंके आधीन है॥

पोर्तुगालकी राजधानी लिसबन——टेगसनदीके दहाने पर——ओपोर्टो—पोर्ट नामी मदिराके कारण प्रसिद्ध है ॥

इटली में सारडिनियां की राजधानी ट्यूरिन है—जनेवा नगर बन्दर है इसके नामसे भूमध्यस्थ समुद्र में जनेवाकी खाड़ी प्रसिद्ध है——टस्कनी की राजधानी——फ्लारेन्स आरनो नदी पर है——जो एक समय में रोमा नगर पृथ्वी भर की राजधानी था परन्तु अब केवल पोप के अधिकार की राजधानी है ॥

यूरुपी टर्की की राजधानी क़ुस्तुन्तुनियां नगर है जिसे कान्स्टेण्टे न ने बसाकर रूमके आधिकारका मुख्य स्थान किया था—बास्फ़ोरसके दहाने पर है—मन्सो

नदी पर ऐड्रियेनोपिल——सलोनिका की खाड़ीपर वायु कोण में—डेन्यूबनदी पर गिलग्रेड बड़ा मजबूत किले बन्द नगर है ॥

एथेन्स—कारिन्थ—स्पार्टा——थीब्ज ये यूनानके चारों नगर पृथ्वी भर में सबसे सुन्दर और प्रसिद्ध थे परन्तु इस कालमें वे खंडहर से रह गयेहैं और अब एथेन्स राजधानी है ॥

ऐसलेंडकी राजधानी—स्कालहालट और कारसिका में अजासिव—सार्डिनियां में कागलियारी—सिसिली में पालर्मो और मसीना प्रसिद्ध नगर हैं ॥

१३ पाठ ॥

जातों के गुण स्वभाव आदि का वर्णन ॥

१——यद्यपि यूरुप में कुलीन लोगों ने सभ्यहोने के कारण इन दिनों में बड़ी वृद्धि की है तो भी इस देश के बहुत से मनुष्य असभ्य और दास हैं ॥

२——स्वीडन के वासी प्रसन्न चित्त और विज्ञ और नेक चाल होते हैं ॥

३—नारवे के लोग धूर्त हैं परंतु आतिथेय और सब से शिष्टाचारी रखते है ॥

४—डेनमार्क के वासी परिश्रमी और सब से मिलाप रखते हैं ॥

५—अङ्गरेज़ लोग स्वाधीनता और हाथ से वस्तु बनाने की प्रवीणता, वाणिज्य सम्बन्धी उद्योग, जहाज़ी कर्म्म, दीन जनोंको दान देना इत्यादि सब बातों में अद्वितीय हैं, परन्तु लोग कहते है कि वे परदेशियों

से दम्भ करते हैं और जो वस्तु अंग़रेज़ी न हो उसकी निन्दा करते हैं ॥

६—स्काच या स्काटलेण्ड के लोग साहसी, और विचार से ख़र्च करनेवाले होते हैं और सब प्रकार की विद्या और नीति पढ़ने में बड़ी प्रीति करते हैं ॥

७—अयरिश या अयरलेण्ड के लोग प्रसन्नचित्त, सन्तोषी हैं परंतु शीघ्र झगड़ा और कलह करने के कारण प्रसिद्ध हैं ॥

८—फ़्रान्सीस अर्थात् फ़्रान्स के लोग नेक चलन और प्रसन्न चित्त और परिश्रमी हैं सेना और युद्ध कर्म में बड़े निपुण और शिल्प विल्प में चतुर और विद्या के विस्तार करने में उद्योग रखते हैं परंतु ओछे, अनुपकारी और नीति रहित हैं ॥

९—हालेण्ड के वासी जिनको डच कहते हैं परिश्रमी, किफ़ायती और स्वच्छ हैं ॥

१०—जर्मनी लोग गम्भीर दृढ़कर्म्मी और विद्यावान हैं ॥

११—स्विटज़रलेण्ड के लोग इसलियेप्रसिद्धहैं कि वे शूरवीर, उपकारी और अपने देशको बहुतचाहते हैं परन्तु भाड़ेके सिपाही होगये हैं अर्थात हरयुद्ध में द्रव्यके लिये लड़ते हैं इसी कारण निन्दित हैं ॥

१२—आस्टरिया के महाराज्य में आस्टरिया—हङ्गरी—पोलेण्ड और इटली के लोग हैं ॥ पोलेण्ड के कुलीन लोग पूर्वकाल में स्वाधीनता के कारण प्रसिद्ध थे ॥

१३——स्पेन और पोर्तुगाल के लोग अहङ्कारी, कीनावर, मूर्ख और मतावलम्बी हैं और ये साहस और शूरता के कारण पूर्व्वकाल में प्रसिद्ध थे ॥

१४——इटली के लोग गाने बजाने, कविताई, चित्र विद्या, इनमें निपुण हैं परन्तु मतावलम्बी, कीनावर, आलसी, और अनीत करनेवाले हैं ॥

१५—टरकी के लोग अज्ञान और मतावलम्बी हैं परन्तु बड़े सत्यवादी गिनेजाते हैं ॥

१४ पाठ ॥

मत और राज्यों का विषय ॥

यूरूप में केवल टर्कों के बीच मुहम्मद के मत पर चलते हैं और बाक़ी सब ईसाई हैं ॥

फ्रान्स, स्पेन, पोर्तुगाल, इटली, बेलजियम, अयरलेंड, पोलेंड, और जर्मनी के दक्षिण के देश और स्विटज़रलेंड का कुछ भाग ये सब रोमन कैथलिक हैं अर्थात् वे उस ईसाई रीतिको मानते हैं जिसका प्रत्यक्ष धर्म्माध्यक्ष रूम का पापा है ॥

यूनान और रूसके लोग ग्रीकचर्च अर्थात्यूनानी गिरजा की शिक्षा के अनुसार चलते हैं जो कुछ २ रोमन कैथलिक से मिलती हुई है और इसमतका मुख्य धर्म्माध्यक्ष कोई नहीं है ॥

नारवे, स्वीडन, डेन्मार्क, प्रुशिया, जर्मनी के उत्तर के देश, इङ्गलेंड, स्काटलेंड, हालेंड, और स्विटज़रलेण्ड, के लोग बहुधा प्रोटिस्टेण्ट हैं

अर्थात् उनके लोग पोपकी आज्ञा से विपरीत हैं और केवल बायबिल के मतपर चलते हैं ॥

टर्की, रूस आस्टिरिया के बहुधा भागों में स्वेच्छा चारी राजा राज्य करते हैं, और उनकी इच्छाही व्यवस्था है॥

इटली के मध्यमें टस्कनी का पापा राज्यकरता है और जर्मनी के कई प्रदेशों में ड्यूक अर्थात् बड़े अमीर राज्य करतेहैं और स्विटज़रलेण्ड में पंचायती राज्य है ॥

ग्रेटब्रिटेन और अयरलेंड के संयुक्त राज्यमें एक बादशाह राज्य करता है परन्तु वहां की व्यवस्था बादशाह और प्रतिष्ठित लोग और प्रजा के योग्य मनुष्यों से मिलकर बनाईजाती है और उन्हीं व्यवस्थाओं के आधीन बादशाह भी रहता है अयरलेंड में लार्डलाफ़्टिनेण्ट उन व्यवस्थाओं कोचलाते हैं ॥ फ्रान्स पहले स्वेच्छाचारी राज्य था फिर प्रजा प्रभुत्व हुआ फिर सेनाधिकारी महाराज्य हुआ उसके पीछे अस्वतंत्र राज्य फिर प्रजा प्रभुत्व और फिर सेनाधिकारी हुआ ॥

यूरुप के बाक़ी देश अपने २ राजाओं के स्वाधीन हैं परन्तु कुछ उनमें अन्याई से भी हैं ॥

इनमें डेन्मार्क—हालेंड और स्वीडनका राज्य सबसे अच्छा है और स्पेन——पोर्तुगाल—नेपिलस और सार्डिनियां का राज्य सबसे बुरा है ॥

१५ पाठ ॥

वाणिज्य की प्रधान द्रव्यों का वर्णन ॥

इङ्गलेंड में—अनेक प्रकार के सूती और ऊनी कपड़े, शस्त्र, कल, शीशा, टीन और मिट्टी के बर्तन काग़ज़, और सूखी निमकीन मछलियां शराब, और कोयला, और लोहे की वस्तु और अनेक आधीन देशों की उत्पन्न हुई द्रव्य ये सब होती हैं ॥

स्काटलेंड में ये वस्तु होती हैं—कपड़ा चौपाये हेरङ्ग, और सालमन मछलियां, लोहा, पश्चिम हिन्द की द्रव्य ॥

अयरलेंड में—अनाज, बैल, सुअर, सलौना मांस, आलू, शराब, और सनकाकपड़ा होताहै ॥

ग्रेटब्रिटेन के वाणिज्य का विस्तार पृथ्वी भरमें अद्वितीय है ॥

रूस और स्वीडन में—चरबी, चमड़ा, राल, पलास, सन, लट्ठा, और लोहा होता है ॥

नारवे में—चर्बी, मक्खन, सूखी मछली, लट्ठा फिटकिरी और तांबा होता है ॥

फ्रान्समें—रेशम, अचार, ऊनीकपड़ा, बरांडी, शराब, मख़मल, वैनशराब, शीशे और चीनीकेबर्तन होते हैं ॥

बेलजियममें—ऊन, रुई, लोहा, कोयला लैस ॥

हालेंडमें—चौपाये, सूखीमछली, काड़ और हिरङ्गमछली, ह्वैलमछलीका तेल, गट्टा, गरममसाला और मजीठ उत्पन्न होते हैं ॥

रुशियामें—गेहूं, नोन, लैस, होते हैं ॥

जर्मनी में—ऊन, सलोनामांस, रेशम, पलास सन, मजीठ, तमाकू, और लकड़ी होती है ॥

आस्टरिया में—चांदी, सोना होता है ॥

पोर्तुगाल और स्पेन में——रेशम, अखरोट, बादाम, सङ्गमरमर, अंजीर, काक और अंगूर की शराब होती है ॥

स्विटज़रलेंडमें——घड़ी खिलौने होते हैं ॥

इटलीमें——रेशम, बनस्पति का तेल, मेवा, और सङ्गमरमर होता है ॥

तुर्किस्तान में——ऊनीकपड़ा, चमड़ा, दवाई कहवा अंजीर, क़ालीन होते हैं ॥

सातवां अध्याय ॥

आफ़्रिका का वर्णन ॥

१ पाठ ॥

सीमा और प्रधान भागों का वर्णन ॥

१—आफ्रिका एक बड़ा प्रायद्वीप यूरुप के दक्षिण में है जिसको स्वेज़ नाम डमरुमध्य एशिया से ईशान कोण में मिलाता है ॥

२—पृथ्वी के इस भाग के मध्य का विषय थोड़ा जाना गया है और इसके भीतर का विशेष करके नहीं जानते इसलिये इसके संपूर्ण भागों की गणना नहीं है परन्तु इसके मुख्य २ देश ये हैं ॥

३—उत्तर में प्रधान देश ये हैं—मिश्र—बारबरी

देश अर्थात् ट्रिपोली-ट्यूनिस-आल्जिअर्स-फ़ेज़ः मुराको ॥

पश्चिमी तट पर ये हैं-सेनीगेम्बिया-गिनी जहां दासों के लेने को जहाज़ ठहरते हैं ॥

और दूसरे विभाग ये हैं-आशांटी-डहोमी-बिनिन——व्याफ़रा-लांगो——कांगो-एंग्यूला——बेंग्यूला ॥

दक्षिण में-उत्तमाशा अन्तरीप और उसके ऊपर हाटेण्ट और काफ़रेरिया है ॥

पूर्व्व में सफ़ोला——ज़ंगवार——अबिस्सीनियां, न्यूबिया-इनके सिवाय और भी देश हैं जिनका हाल मालूम नहीं ॥

मध्य में——फेज़ान-डारफर——वोर्न-स्रोडन या निग्रेशिया और बहुत से देश जो अब तक नहीं देखे गये हैं सब आफ्रिका के मध्य में हैं ॥

इनमें से कई देश यूरुपी लोगों के आधीन हैं थोड़े दिनों से फ्रान्स वालों ने आलजिअर्स को विजय करके अपनी बस्ती बसाई है ॥

पश्चिमी तट पर कांगो में पोर्तुगीज़ों का राज्य है अंगरेज़ों का अधिकार उत्तमाशा अन्तरीप और अन्य कई एक बस्तियों में है ॥

मिश्र का राज्य पृथ्वी भर में प्राचीन विख्यात है पूर्व काल में यह सब प्रकार की विद्या का स्थान था थोड़े दिन हुये कि यह टर्कों के आधीन था परन्तु अब यहां का बादशाह स्वाधीन है ॥

२ पाठ ॥

अन्तरीपों का वर्णन ॥

इस भाग के ओर पास के प्रसिद्ध अन्तरीप येहैं ॥

बोन या बोना——बांको——वर्ड——पलमास—उत्तमाशा——गारडाफू ॥

बोन अन्तरीप सिसिली के अत्यन्त निकट है ॥

बांको पश्चिम ओर समुद्रमें निकला हुआ है ॥

वर्ड बांको से नीचे है ॥

पलमास अन्तरीप गिनी के तट पर है ॥

उत्तमाशा जिसे सन् १४८६ ई० में डिआज़ साहब ने निकाला दक्षिण में अत्यन्त प्रसिद्ध है ॥

गारडाफ़ू अत्यन्त पूर्वी नोक है ॥

३ पाठ ॥

पर्वत और मरुभूमि के विषय में ॥

ऐटलास पर्वत—जिसके कारण आटलांटिकमहासागर का नाम उत्पन्न हुआ यह पर्वत श्रेणी मराको के पूर्व से लेकर मिश्र देशके निकट तकहै इसपहाड़ की चोटीको प्राचीन लोग कहतेथे कि आकाश उसके सहारे से स्थिर है ॥

मून और कांग नाम पर्वत एक श्रेणीहै जिसका विस्तार सिरालियोन्स से अबिस्सीनियां तक है ॥

लैप्यूटा पर्वत——पूर्वमें है जिसको कहते हैं कि पृथ्वी की रीढ़ है ॥

एक पर्वत श्रेणी लालसागर के पश्चिमी तटपर है परंतु इसका नाम नक्शों में नहीं लिखा है ॥

आफ्रिका प्रायद्वीप का आकार अनूठा है बड़े २ मैदान अत्यन्त बालूके हैं जहां पानी और वृक्ष नाम को नहीं—सहारा नाम की एक बड़ी मरुभूमि जो बारबरी देशके नीचे २ दूर तक चलीगई है बड़े २ मैदान मिश्रके पश्चिम येहैं सुलेमा—बारका—लिबिया ॥

४ पाठ ॥

झीलों का वर्णन ॥

पूर्वी भागमें विक्टोरियान्याजा——इसके नीचे लैप्यूटा पर्वत के पश्चिम ओर——मरावी और मध्य में शाड ॥

५ पाठ ॥

खाल और आखातों का वर्णन ॥

भूमध्यस्थ समुद्र में—अबूकर नाम आखात—सडरा की खाड़ी——काडिज़ हैं ॥

अबूकर में नेलसन साहबने फ्रांसीसी जहाज़ों पर बड़ी विजय पाई थी ॥

आटलांटिक में—गिनीका खाल और व्याफरा का नाका जिसमें नैगरनदी कई दहानों से गिरती है ॥

दक्षिण में टेबूलवे है ॥

हिन्द महासागर में डेलागोआ नाम आखात—सफ़ोला——मोज़म्बिक का नाला जो मैडेगास्कर उपद्वीप और आफ्रिका के मध्य में है ॥

६ पाठ ॥

द्वीपों का वर्णन ॥

आफ्रिका के उत्तर से क्रम पूर्वक ये द्वीप हैं ॥ एज़ोर्स—मडेरा—टेनेरिफ—कनेरी—वर्ड—फरनाण्डपो—सेण्टहेलीना—मैडेगास्कर—बोर्बन—मोरशिश—सकोतरा ॥

एज़ोर्सद्वीप जो यथार्थ में यूरुप का द्वीप है—आटलाण्टिक महासागर में है ॥

मडेरा एज़ोर्ससे नीचेहै और उस्से बहुत दक्षिण वर्ड है ये सब पोर्तुगाल के आधीन हैं ॥

मडेरा शराब के कारण प्रसिद्ध है ॥

मडेरा और वर्डके बीच में कनेरी है और नैगरके दहाने पर फरनाण्डपो है ये सब स्पेन के आधीन हैं, कनेरी द्वीपोंमें टेनेरिफ चोटी सब पहाड़ोंसे ऊंची है ॥

गिनी के आखात में बेंग्यूला के पश्चिमओर सेंटहेलीना द्वीप अंगरेज़ों के आधीन है यहां फ्रान्स का बादशाह नपोलियन क़ैद हुआ था यहां की धरती कुछ २ ऊंची पथरीली है ॥

पूर्व ओर मैडेगास्कर द्वीप अत्यन्त बड़ा है वहां का बादशाह वहीं का निवासी है ॥

मैडेगास्कार के पूर्व दो द्वीप मोरशिश और बोर्बन हैं—पहिला अंगरेज़ोंके आधीन और दूसरा फ्रान्सीस के आधीन है ॥

७ पाठ ॥

नदियों का वर्णन ॥

आफ्रिका की प्रसिद्ध नदियां मिश्र से ये हैं ॥ नील—सिनीगाल—गेम्बिया—रायो ग्रेण्डो—नैगर—ज़ैर या कांग—फ़िश—आरेंज—ज़ेम्बिसी ॥

नील नदी मिश्र में अत्यन्त प्रसिद्ध है इसकी पूर्वी धारा अबिस्सीनियां के पहाड़ों से निकलती है और पश्चिमी धारा अर्थात नील नदी लोग कहते हैं कि मून पर्वत से निकली है यह नदी दक्षिण से उत्तर को बहती है थीबज के खंडहरों और मिश्र के मीनारों के बीच क़ाहिरा राजधानी में होकर दो दहानों से भूमध्यस्थ सागर में गिरती है पूर्वी दहानेपर डमीयटा और पश्चिमी दहाने पर रोज़ेटा प्रसिद्ध बन्दर हैं, मिश्रदेश में वर्षा थोड़ी होती है परन्तु इस महानदीके कारण यह देश अत्यन्त उर्वरा है जैसे गङ्गा नदी के तटकी धरती उसके बसौड़ी बढ़ाव से उर्वरा होती है वैसाही इस नदी का वृतान्त है ॥

सेनीगाल—गेम्बिया—रायोग्रांडी—कांग—पहाड़ से निकलकर पूर्व ओर से गेम्बिया में बह कर एटलाण्टिक महासागर में गिरती हैं ॥

कांग नदीकांग भागमें—और फ़िस उससे नीचे उत्तर से दक्षिण को बहती है—आरंज—कालोनी अन्तरीप के उत्तरीय सीमा पर है ॥

ज़ेम्बिसी—पूर्वी तट पर सफ़ोला और मोज़-म्बिक के बीच में है ॥

नैगर—कांग पहाड़ से निकलकर उत्तर ओर पूर्व ओर बहकर वहांसे दक्षिण होकर कई दहानों से गिनी के खाल में गिरती है यह नदी बहुतसी चम-त्कारी बातों के कारण यूरुप में प्रसिद्ध है पार्क साहब शूर पथिक ने इसका निर्गत स्थान ढूढ़ने के लिये उद्योग किया परन्तु वह नमिला और अपना जीव खोया वह अब थोड़े दिनों से कांग के पहाड़ों में निश्चय हुआ है इस नदीको बड़ा अच्छी धारा बहुत दूरतक जहाज़ चलानेके योग्य है और अच्छे बस्ते हुये देशों के बीचमें बहती है इसकारण वाणिज्यके लियेबहुतही उपकारीहै ॥

८ पाठ ॥

मुख्य नगरों का वर्णन ॥

क़ाहिरा नगर मिश्र की राजधानी मीनारों के निकट है ॥

स्कन्दरिया—जिसे सिकन्दर शाहने बसायाथा ॥

स्वेज़—क़ासियर—लालसागर के तट पर दो बड़े बन्दर हैं ॥

लक्सर इस कारण प्रसिद्ध है कि उन गावों में से यह मुख्य नगर है जो थीब्ज नगर के स्थान पर बसे हैं ॥

बारबरी देश के सब विभाग अपने २ मुख्य नगरों के नाम से प्रसिद्ध हैं अर्थात उनकी राजधाना का

भी वही नाम है जैसे—ट्रिपोली का मुख्य नगर—ट्रिपोली—ट्यूनिसका ट्यूनिस—आलजीअर्स का—आलजीअर्स—फ़ेज़ का—फ़ेज़—मुराको का—मुराको॥

ट्यूनिस नगर-प्राचीनप्रसिद्धनगरकार्थेजकेपासहै॥

स्यूटा—नामी क़िला जिबराल्टर के सन्मुख स्पेन के आधीन है॥

फ़ेज़ देश में टैञ्जीअर—टिचुअन—बन्दर है॥

पश्चिमी तटपर सिरालियोन नगर में अङ्गरेज़ों का राज्य है और हबशी लोग जो दासों के जहाज़ों से छीन लिये जाते हैं उनका यह आश्रय स्थान है॥

डहोमी की राजधानी अबूमी है॥

आसाण्टी की राजधानी कमाज़ी है॥

कांगोमेंसेण्टसाल्वेडर पोर्तुगीज़ों के आधीनहै॥

दक्षिण में टेबुलबेपर केप्टौन नाम नगर है जिसको डच लोगों ने बसाया पर अब अङ्गरेज़ों के आधीन है॥

पूर्वी तट पर मोज़म्बिक नगर पोर्तुगीज़ों की बस्ती है॥

गण्डार अबिस्सीनियां का मुख्य नगर है॥

सिनार और डेंग्यूला न्यूबिया के प्रधान नगरहैं॥

मध्य में फ़ेज़ान की राजधानी मोर्ज़िक है॥

बोर्नो की बोर्नो—और नैगर नदी के तट पर टम्बकटू और हौसा प्रधान नगर हैं॥

९ पाठ ॥

जातों के गुण स्वभाव आदि का वर्णन ॥

मिश्रदेश के लोग आलसी, दरिद्री, और उन सब अवगुणों करके कलङ्कित हैं जो अन्यायी राज्य में प्रतिष्ठा हीन लोगों को हो जाते हैं पहले लोग जो काप्ट कहाते थे उनमें से अब बहुत थोड़े रहे हैं॥

बारबरी नाम देशों में वहां के प्रकृति बासियों के विशेष तुर्क, अरब, यहूदी, और मूर लोग बसते हैं वे सब कपटी, निर्दई, अहंकारी, और मतावलम्बी हैं और यद्यपि दास लोगों पर निर्दयता करने और समुद्री डकैती के कारण प्रसिद्ध हैं ॥

मध्य आफ्रिका के लोगों का कालावर्ण मोटा होठ और घुघराला बाल होता है उनका सामान्य नाम हब्शी है इन सबों की चाल और स्वभाव में बड़ा अन्तर है, कोई २ जाति तो गंभीर, शिक्षा योग्य और आतिथेय और कोई २ इनके अत्यन्त बिपरीत हैं ॥

इस खण्ड के मध्य की दो तीन जाति जीविका की विद्या में बड़ी निपुण हैं परन्तु बहुधा यहां के लोग बन्य हैं ॥

एक समय ये लोग पशुओं के समान समझे जाते थे तब इनका क्रयविक्रयभी होता था और जानवरों कासा इनसे काम लिया जाता था इसबातकी अयोग्यता और उनके साथ लोगों का अन्याय अब समझागया है कोई २ उनलोगों मेंसे सुधर कर के ऐसे प्रसिद्ध हुये

हैं कि यूरुप के लोगों में भी उनको उत्तम प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है ॥ यूरुप के लोग जो आमेरिका में बस्ते हैं वे तीनसौ वर्ष तक हब्शियों को गिनी के किनारे से पकड़ या मोल लेकर वहां भेजते थे और वहां उनसे वे खेती करवाया करतेथे और विशेष करके पश्चिमी हिन्द के उपद्वीपोंमें ऊख बुवाते थे ॥

यूरुप के सब बादशाहों ने अब दासों के व्यौपार का निषेध किया है, ग्रेटवृटिन की हब्शी प्रजा दासत्व से छुड़ादी गई है परन्तु और देश वालों के आधीन जो हब्शी हैं वे अब तक दासत्वता में फंसे हैं ॥

काफरेरिया और हाटेण्ट के लोग अत्यन्त मूर्ख हैं परन्तु ईशाई मत के उपदेश कर्त्ताओं के अनुसार जाना जाता है कि गंभीर, शिक्षा पाने योग्य और स्वाभाविक सामर्थ्य में भी कुछ कम नहीं हैं ॥

१० पाठ ॥

मत और राज्य का विषय ॥

बारबरी देश मिश्र और कई उत्तर के देश इन में महम्मद के मत पर चलते हैं ॥

हब्शी—काफरेरी और हाटेण्टाट—ये देवपूजक हैं और कुछ२ मुसल्मान हैं तो भी इनमें कोई २ ऐसे जानपड़ते हैं कि उनका कोई मत नहीं है ॥

मूसाई और देवपूजक और ईसाई, इन तीनों में से मिला हुआ हब्श का मत है ॥

आफ्रिका की प्रकृति राज्यस्वेच्छाचारी है और वहां बड़ा अन्याय होता है॥

११ पाठ॥

वाणिज्य की प्रधान द्रव्यों का वर्णन॥

जब तक हिंदुस्तान की राह उत्तमाशा अन्तरीप की ओर से नहीं मालूम थी तब तक हिंदुस्तान की सब चीज़ें मिश्र की राह से जाती थीं और स्कन्दरिया नगर व्यापार का बड़ा स्थान था इनदिनों मिश्र देश में और देशों का व्यवहार बहुत थोड़ा है॥

गिनी और ज़ंगीबार के तट पर यूरुप के लोग कच्चा सोना, हाथीदांत, आबनूस, शुतुरमुर्ग़ का पर कस्तूरी, और कई प्रकार की ओषधि मोल लेते हैं, और इधर उधर के जहाज़ों से छीन छाप कर दास भी यहां बिकते हैं॥

उत्तमाशा अन्तरीप से कई प्रकार की मदिरा अन्य देशों में जाती है, उनमें बड़ी कांस्टेंशिया नाम मदिरा है॥

टेनेरिफ़ और मडेरा भी मदिरा के कारण बड़े प्रसिद्ध हैं॥

बोर्बन और मोरीशिश द्वीप शक्कर और कहवा के कारण प्रसिद्ध हैं॥

मुराको से चमड़ा शुतुरमुर्ग़ के पर और किरमिज़ी रंग आते हैं॥

———

आठवां अध्याय ॥

आमेरिका का वर्णन ॥

१ पाठ ॥

विभागों का वर्णन ॥

आमेरिका नाम महाद्वीप पर दो बड़े प्रायद्वीप हैं जिन्हे उत्तरी और दक्षिणी आमेरिका कहते हैं और इन दोनों को पनामा नाम डमरु मध्य मिलाता है ॥

आमेरिका के बासी जो सभ्य हैं सो यूरुप सन्तान में से हैं किसी २ ने अपने देशसे कि जहांसे आये थे कुछ सम्बन्ध नहीं रक्खा और कितनेही ऐसेहैं कि जो अब तक उस्से सम्बन्ध रखते हैं ॥

उत्तर आमेरिका के ये भाग हैं ॥

रूसी आमेरिका—इसके वायु कोण में है ॥

वृटिश आमेरिका—राकीनाम पर्वत श्रेणी के पूर्व और बड़ी २ पांचों झीलों के उत्तर है ॥

संयुक्त राज्य जिसका विस्तार पांचों झीलों से लेकर मेक्सिको के आखात तक है ॥

उसकेनीचे मेक्सिको का भाग और मेक्सिको और डमरुमध्य पनामा के बीच में मध्य आमेरिका है॥

ग्रीनलेंड जिसे डेनिस आमेरिका भी कहते हैं प्रथम लोगों ने विचारा था कि यह महाद्वीप का एक भाग है परन्तु अब के दिनों में जाना गया है कि यह एक अलग भाग है और इसके बीच का मार्ग पाले से जमा हुआ है ॥

दक्षिणी आमेरिका में ये भाग हैं ॥

उत्तर में—गियाना—वेनजुला—न्यूग्राण्डा—एक्वाडार ॥

मध्य मे ब्रेज़ील—पीरू—बुलेविया—परागोआई ॥

दक्षिण में—लापलाटा—यूरागोआई—चिली—पेटेगोनियां ॥

२ पाठ ॥

मुख्य विभागों के विषय में ।

बृटिस आमेरिका वह है जो कि संयुक्त राज्यों से उत्तर और आटलांटिक महासागर और रूसी आमेरिका के बीच में है ॥

उसके मुख्य विभाग ये हैं १ न्यूबृटिन—२पूर्वी कनेडा—३ पश्चिमी कनेडा—४न्यूब्रेंज़विक—५ नोवास्कोशिया ॥

रूसी आमेरिका—बृटिस आमेरिका के उत्तर स्थिर महासागर तक और संयुक्त राज्यसे बाहिरंग के मुहाने तक विस्तृत है ॥

संयुक्त राज्य के—३१ भाग हैं ॥

उत्तर में ६—१ मैन—२ मैसेच्यूटस—३न्यूहेम्पशार—४ वमट—५—रोड का टापू द्वीप ६कनेक्टीकट ॥

मध्य में ५ भाग हैं—१ न्यूयार्क—२ पेन्सिलवेनियां—३न्यूजर्सी—४ डेलावेआर—५ मेरीलेण्ड ॥

दक्षिण में ५ भाग हैं—१ वार्जीनियां—२उत्तरीय कारोलेना३ दक्षिणी कारोलेना—४जार्जिया—५फ्लोरीडा ॥

वायुकोण में ६ भाग हैं—१ मिनीसोटा—२ वस्कांसिन—३ आइयोवा—४ मिसूरी—५इलीनइस—६इंडियाना ७मिचीगान—८ओहियो—६ केण्टकी॥

नैऋत्य कोणमें ६ भाग हैं—१ टेनेसी-२इला॰वामा—३मिसीसीपी—४लूज़ियाना—५ आरकान्सस—६ टेक्सस ॥

३ पाठ

प्रायद्वीपों के विषयमें ।

१—प्रायद्वीप नोवास्कोशिया—२ पूर्वी फ्लारीडा यह संयुक्त राज्यके दक्षिण में है ३ यूकाटन—मेक्सिको में है—४ कालीफोर्नियां—उत्तर आमेरिकाके पश्चिमी तट पर है ॥

४ पाठ ॥

अन्तरीपों का वर्णन ॥

फेअरवलअन्तरीप—ग्रीनलेण्डकी दक्षिणी नोक है ॥

सेण्टहकअन्तरीप—ब्रेज़ीलकी पूर्वी नोक है ॥

हार्न अन्तरीप—दक्षिणी आमेरिका के नीचे एक छोटे द्वीप टाइलफूएगो की दक्षिणी नोक है ॥

एलासका अन्तरीप——रूसी आमेरिका के वायु कोण में है ॥

५ पाठ ॥

पहाड़ों का वर्णन ।

आमेरिका का सब पश्चिमी तट मेगेलेन मुहाने से ले उत्तर महासागर तक एक पर्वत श्रेणीसे व्याप्त है जिसमें कोई२ भाग बड़ा ऊंचा है इस श्रेणी का

जो भाग दक्षिण अमेरिका में है वह ऐण्डीज़ या कारडेलेराम कहलाता है यह पर्वत श्रेणी पृथ्वीभर के पहाड़ों से ऊंची और लम्बी है ॥

ऐण्डीज़ पर्वतकी अत्यन्त प्रसिद्ध चोटियां ये हैं ॥

चेम्बराम्—चोटी सबसे ऊंची है ॥

ऐण्टीसाना—ज्वालामुखी है जो अब बन्द है ॥

कोटोपैक्सो—चोटी ज्वालामुखी है जिसमें से अभी तक आग निकलती है ये अक्वाडार में हैं ॥

अकानकागेवा—चिलीकेपूर्वी सीमा पर ज्वाला-मुखी अत्यन्त ऊंची चोटी है ॥

मैक्सीकोका भाग छोड़करके उत्तर श्रेणी दक्षिण श्रेणी से बहुत नीची है, उत्तर महासागर की ओर इसको राकी पर्वत कहते हैं ॥

मेक्सिको में पूपक्याटीपाटल—सब से ऊंची चोटी ज्वालामुखी है ॥

पूर्व में—एपेलेश्चिअन या ऐलेघनी नाम पर्वत संयुक्त राज्यमें उत्तर से दक्षिण तक विस्तृत है ॥

६ पाठ ॥

झीलों का वर्णन ॥

अमेरिका की झीलें पृथ्वी भर की झीलों से बहुत बड़ी हैं ॥

उत्तर अमेरिका में ये पांच बड़ी झीलें हैं ॥

अंटेरिओ— एरी—ह्यूरन—मिचीगन—सुपीरियर, ये बहुधा अपनी बड़ाई के कारण समुद्र के भाग के समान हैं ये सब आपस में मिली हुई हैं

इसलिये देशीय व्यापरों में बड़ी सुगमता पड़तीहै ॥

अंटेरिओ और एरीके मध्य न्याग्रानाम एक बड़ा झरना है ॥

सुपीरिअर झीलके वायुकोणमें विनीपेग—स्लेव—और वेअर इत्यादि बहुतसी झीलें एक पंक्तिमें हैं ॥

वरमएट देशमें—शैम्पलैन झील और मेक्सिको देशमें——निकारागोआ झील है ॥

दक्षिण आमेरिका में—टीटीकाकापीटल झील—लापलाटाके इंडीज़ पर्वतमें है और विंज़ुलामें मरा॰क्यूबो नाम झील समुद्र से मिली हुई है ॥

७ पाठ ॥

खाल और आखातों का वर्णन ॥

आमेरिका के चारों ओर पानी के ये भाग हैं ॥

वॉफ़न—हडसनका आखात—सेएटलान्स की खाड़ी—फएडी—मेक्सिकोकी खाड़ी—हिंडुगस—कारबी नाम समुद्र——डैरियन की खाड़ी—कैलिफ़ोर्नियां की खाड़ी ॥

आमेरिका के ईशान कोण में—वैफिन और हड॰सन के आखात हैं ॥

कनेडा के पूर्व—सेएटलान्स की खाड़ी है ॥

न्यूब्रिन्सविक और नोवास्कोशिया के बीचमें फएडी का आखात है ॥

फ्लारिडा और मेक्सीको के मध्य में मेक्सीको का खाल है ॥

मध्य आमेरिका में हिंडुरास है ॥

मध्य आमेरिका और दक्षिणी आमेरिका और पश्चिमी हिन्दनामउपद्वीपों के बीचमें कर्बी समुद्र है

डेरिअन की खाड़ी कर्बी समुद्र का एक भाग पनामा और न्यूग्राण्डा के बीच में है ॥

प्रायद्वीप कालीफोर्नियां और मेक्सीको के मध्यमें कालीफोर्नियां का खाल है ॥

८ पाठ ॥

मुहानों का वर्णन ॥

डेविस मुहाना—वेफिन आखात का जल समुद्र से मिलाता है ॥

हडसन मुहाना——हडसन आखात का जल समुद्र में मिलाता है—टाडलफूयगो और पैटेगोनियां के बीच में मैगीलान का मुहाना है ॥

९ पाठ ॥

द्वीपों का वर्णन ॥

आमेरिका के द्वीपों में पश्चिमी हिन्द नाम बड़े प्रसिद्ध द्वीप हैं जो उत्तरी और दक्षिणी आमेरिका के बीच अनेक समूह करके वर्तमान हैं और वे ये हैं—बहमा—बड़ाऐण्टली—छोटा ऐण्टली या कर्बी—वर्मोडा ॥

बहमा——प्रायद्वीप फ्लारीडा के पास में है ॥

बड़े ऐंटली में क्यूबा—हयाटी या सेण्ट डोमिङ्गो पोर्टोरेको और जमीका बड़े २ द्वीप हैं ॥

छोटे ऐण्टली में सेण्टयूस्टेशिया—ऐण्टीगोवा—

गाडालूप—मार्टिनीक—सेंएट विंसेंट—बरबेडा और क्यूराकू है॥

बरम्यूडा उपद्वीप संयुक्त राज्य के पूर्व में है॥

इनके सिवाय कनेडा के पूर्व—न्यूफौंडलेंड है॥

वेंज़ुला के निकट——टिरनिडाड है॥

पैटेगोनियां के पूर्व——फाकलेएड है——दक्षिण में टाडिलफूरगो है॥

आटलांटिक में चिली के पश्चिम ज्वानफरनें-एडीज़ है——क्वीटो के पश्चिम——गैलेपैगास नाम उजाड़ द्वीपों के समूह हैं——उत्तर आमेरिका के पश्चिम और क्वाडरा नाम द्वीप है॥

क्यूबा—पोर्टोरैको—ज्वान फर्नेएडीज़—फाकलेंड ये सब स्पेन के आधीन हैं॥

जमीका—बार्वेडोरसेएटविंसेएट——ऐएटीगोआ, टिरनिडाड और कर्बी के बहुत से दक्षिणी द्वीप और वरम्यूडाज़—न्यूफौंएडलैएड—क्वाडरा, ये सब ग्रेटवृटिन के आधीन हैं॥

गाडेलूप—मार्टिनीक और कई कर्बी के उप-द्वीपफ्रान्स के आधीन हैं॥

क्यूरेकाओ—सेएटयूसेशिया——डचके आधीनहैं॥

हयाटी, या सेएटडोमिङ्गो पहिले फ्रान्स और स्पेनके अधिकार में था परन्तु अब स्वाधीन हब्शियों का राज्य है॥

१० पाठ ॥

नदियों का वर्णन ॥

उत्तरी आमेरिका में—मिसीसिपी नदी—पश्चिम के पहाड़ों से निकल कर मिसूरी—ओहियो और लाल नदी से मिलकर दक्षिण ओर बहकर मेक्सिको के आखात में गिरती है ॥

आमेरिका की बड़ी झीलों का और से एटला॰ रंस खाड़ी के बीच का जो पानी नदी के समान है उसे सेराटलार्न्स नदी कहते हैं ॥

रायोडेलनार्ट नदी——मेक्सिको के पहाड़ से निकल कर अग्नि कोण में बहकर मेक्सिको के आखात में गिरती है ॥

दक्षिण आमेरिका में ये नदियां हैं ॥

मैरेनन् या अमेज़ान——पृथ्वी भर की नदियों में सब से बड़ी है यह नदी पीरू देश के ऐराडीज़ पर्वत से निकल ईशान कोण में बहकर आटलांटिक में गिरती है इसमें २०० नदियां मिलती हैं जिसमें सबसे बड़ी नदी मडेरा है ॥

रायोडीलापलाटा नदी—पैराग्वे—यूराग्वे और मेरेना नदियों के संगम से बनी है जो चिली के इराडीज़ पर्वत से निकलतीहैं यह नदी दक्षिण ओर बह कर आटलांटिक में गिरती है——ब्यूनसएरीज़ नगर इसके दहाने से २०० मील दूर है वहां ३० मील चौड़ी है ॥

ओरिनाको नदी—बिन चूला में बड़ी नदी है॥

११ पाठ ॥

प्रधान नगरों का वर्णन ॥

बृटिश अमेरिका के नगर——क्यूविक राजधानी और माण्ट्रियल प्रधान नगर पूर्वी कनेडा में सेण्टलारैन्स नदी पर दोनों हैं ॥

किङ्गस्टन नगर—ऑंटेरिओ झील के वायु कोण के तटपर और यार्कशियर——इसी झीलके अग्नि कोण के तटपर——ये दोनों पूर्वी कनेडा में हैं ॥

न्यूब्रंज़बिक में—फ्रेडिक्सटौन नगर और नोवास्कोशिया में——है लीफ़ाक्स है ॥

संयुक्त राज्य के नगर ॥

वाशिङ्गटन राजधानी —— मैरीलैंड में है ॥

फ़्लाडेलफ़िया——पेन्सल वेनिआ देश में डेलावेअर नदी पर है ॥

न्यूयार्क प्रसिद्ध बन्दर है और अत्यन्त बसा हुआ है॥

बोस्टन नगर—मैसाच्यूसेट्स में है ॥

चारलेस्टन——दक्षिण कारोलीना में है ॥

रिचमण्ड नगर——वर्जिनियां में है ॥

सिंसीनाटी——ओहिओ में है ॥

न्यूआर्लियंस—लूज़ियाना में मिसीसिपी नदी के दहाने के निकट है ॥

मेक्सिको के नगर ॥

मेक्सिको—प्राचीन राजधानी है ॥

वीराक्रूज——प्रधान बन्दर है ॥

आकापलको—पश्चिमी तटपर बन्दर है ॥

गाटेमाला और स्यूडाडरियल नगर—गाटे-माला में हैं ॥

दक्षिणी अमेरिका के मुख्य नगर ॥

गियाना के तीन भाग हैं—फ्रेंचगियाना—डच-गियाना और इङ्गलिशगियाना ॥

फ्रेंचगियानामें कैन राजधानी—मिर्च के कारण प्रसिद्ध है ॥

डचगियाना में—पैरामारीबो है ॥

इंगलिशगियाना में—जार्जटौन राजधानी है ॥

काराकास—विंज़ूला में—सैएटाफ़ी—न्यूग्रां-डामें—क्यूटू—इकवाडारमें है इसकी धरती समुद्र के जल से १0000 फ़ुट ऊंची है—कार्थेज़ीना उत्त-रीय तटपर बन्दर है ॥

ब्रेज़ील देशमें सैएटसिवास्टियन या रायोडी-जेनेरो या रायो नाम राजधानी है ॥

बेहिआ या सैएटसालवेडर और पर्नेंबुको बन्दर हैं॥

लैमा—पीरूदेशमें राजधानी है और प्राचीन राजधानी कज़्को है ॥

चुक्कीसका—बोलेविया में है ॥

ब्यूनस एरिज—लापलाटा की राजधानी—रायोडी लापलाटाके दहाने पर अत्यन्त सुन्दरताई से बना है॥

सैएटयागो—चिली देशकी राजधानी है और वालपैरासो स्थिर महासागर में बन्दर है ॥

पश्चिमी हिन्दमें जमेका द्वीपका प्रधान नगर किंगस्टन है ॥

क्यूबामें हवेना मुख्य नगर है ॥

१२ पाठ ॥

जातिके नाम और गुण स्वाभाव आदिका वर्णन ।

आमेरिका के पहले प्रकट करने वाले जब इस देश में पहुंचे हैं तब जाना कि हिन्दुस्तानमें पहुंचे हैं इसीकारण से वहांके निवासी अबतक हिंदू कह-लाते हैं और अबभी उनकी सन्तानका यही नामहै॥

उत्तर आमेरिका के उत्तर और ईशान कोण के निवासी एसक्कीमो कहलाते हैं और मध्यमें वन्यहैं ॥

संयुक्त राज्य के बहुधा हिंदूहस्तकृत विद्या को अच्छे प्रकार से जानते हैं कियूरुपवालों के समान होने लगे हैं उस में चिरो की और इरोक्वइस जातें औरों से अधिक सभ्य हुई हैं ॥

संयुक्त राज्य के निवासी अङ्गरेज़ों की सन्तान में हैं ये लोग सभ्य जातों में उत्तम हैं ॥

मेक्सिको के बासी जो स्पेन वालों की सन्तान हैं वे अपने उद्योगी और नामी बापदादों की अपेक्षा बहुत घट गये हैं ॥

दक्षिणीय आमेरिका में हिंदू अर्थात वहां के निवासी बहुत हैं कुछ उनमें से स्पेन के और पोर्तुगालवालों के आधीन हैं ॥

मेगेलान मुहाने के निकट पाटेगोनियां के कुछ लोग लम्बे और भयङ्कर रूप के हैं ॥

चिली देश के अराकानीयन लोग दक्षिण

गियाना के आस पास रहते हैं अत्यन्त अभिमानी और निर्दई हैं ॥

लापलाटा नदी के तटपर अशोयन लोग रहते हैं ॥

यद्यपि स्पेन और पोर्तुगाल की सन्तान वालों के पास आमेरिका में सब से अच्छे देश हैं तो भी वे संयुक्त राज्य के लोगों से परिश्रम, विद्या, धन और अच्छे गुण स्वभाव में हीन हैं ॥

१३ पाठ ॥

धर्म और राज्य का वर्णन ।

सिवाय उन लोगों के जो ईसाई हुये हैं सब देवपूजक हैं ॥

फ्रान्स पोर्तुगाल, वालों की सन्तान रोमन कैथलिक हैं ॥

संयुक्त राज्य और वृटिश आमेरिका के रहने वाले प्राटिस्टेण्ट हैं ॥

जितने स्वाधीन राज्य हैं उनमें सिवाय ब्रेज़ील के सब पंचायती हैं और ब्रेज़ील का राजा आपही राज्य करता है ॥

१४ पाठ ॥

वाणिज्य की प्रधान चीज़ों का वर्णन ।

कैनेडा के उत्तर और ईशान कोण के देशों से समूर बहुत आता है और कैनेडा से बलून—सनो- बर के लट्ठे—छड़ियां—सज्जी—सलोनी मछली और समूर आता है ॥

न्यफौण्डलेण्ड में काड मछली बहुत होती हैं ॥

संयुक्त राज्य के दक्षिणी प्रदेशों में— रुई— तमाकू और चावल अत्यन्त होतेहैं और जार्जिया और दोनों कैरोलेना की रुई और चावल अति प्रशंसनीय है ॥

मेक्सिको—पीरू—कालीफोर्नियां देशों में सोने और चांदी की खान है—पीरू के दक्षिण पोटोसी में अत्यन्त बड़ी चांदी की खान है कि वैसी पृथ्वी भरमें नहीं है ॥

पहिले पहिल पीरूही से पीरूवियन नाम छाल बड़ी गुणकारी आई थी ॥

ब्रेज़ील देश सेसिवाय सोने और चांदी के हीरा बहुत आता है ॥

पश्चिमी हिन्द के द्वीपों में—खांड़, तमाकू, कहवा, और रिमसराब बहुत आती है ॥

मेक्सिको देश के केम्पाची प्रदेश से रक्त चन्दन और हांडूरास से रक्तचन्दन और महागनी की लकड़ी आती है ॥

नवां अध्याय ॥

ओशनियां का वर्णन ॥

१ पाठ ॥

विभागों का विषय ॥

ओशनियां के तीन भाग हैं—१ मलेशिया अर्थात एशिया के द्वीप जो मलाया से मिले हैं— २ आस्ट्रेलेशिया अर्थात वे द्वीप जो आस्ट्रेलिया के आधीन हैं—३ पालीनेशिया अर्थात वे द्वीप जो पृथक २ [illegible] महासागर में हैं

२ पाठ ॥

मलेशिया का वर्णन ॥

मलेशिया में——सुमात्रा—जावा——बोर्नियो—सिलबीज़—मसाला और फिलेपियन के द्वीपहैं और सुमात्रा और जावा के बीच सण्डा नाम का मुहाना है—बोर्नियो और सिलबीज़ के बीच मकासर नाम मुहाना है ॥

मसाले के द्वीपों में—मसाला बहुत उत्पन्न होता है और अम्बायना में——जायफल और बांदा में लौंग होती है—ये दोनों द्वीप भी मसालेही केहैं ॥

ये सब द्वीप विषवत रेखा के आस पास हैं और वहां की पैदावारी बहुत प्रसिद्ध है ॥

सुमात्रा और फ़िलेपानियां स्पेन के आधीनहैं बोर्नियो में वहीं के राजा का राज्य है--जावा और कुछ भाग सिलबीज़ का और मसाला डच के आधीन हैं ॥

बोर्नियो के वायव्य कोण की ओर सारविक में सरजेम्स ब्रूक साहब का राज्य है जिसको सरकार अङ्गरेज़ ने राजा का उपनाम दिया है ॥

३ पाठ ॥

आस्ट्रेलएशिया का वर्णन ॥

आस्ट्रेलएशियामें—आस्ट्रेलिया अर्थात्न्यूहालेण्ड, टस्मोनियां अर्थात वैण्डीमन—न्यू ज़ीलेण्ड-पापोआ अर्थात न्यू गिनी —न्यू ब्रटिन—न्यूकैलेडोनियां——न्यू हैब्रइडिज़ और बहुतसे आस पास केद्वीप हैं ॥

आस्ट्रेलिया—टस्मीनियां—न्यूज़ीलेण्ड द्वीपों को अङ्गरेज़ों ने बसाया है शेष और द्वीप इतने प्रसिद्ध नहीं हैं, इनके निवासी हबशी हैं विशेष करके न्यूज़ीलेंड के लोग मनुष्याहारी हैं॥

श्रीयुत अङ्गरेज़ बहादुर की आस्ट्रेलिया में मुख्य २ बस्तियां ये हैं॥

पूर्व में सडनी—दक्षिण में टस्मीनियां के सन्मुख पोर्टफिलिप—मलबोर—इस्के आगे पश्चिम ओर ऐडीलेंड और टस्मीनियां में दक्षिणी तट पर हबर्ट—उस्से उत्तर लान्सिस्टन और न्यूज़ीलेंड के उत्तरीय द्वीपों के दक्षिण में वेलिंटन नगर हैं॥

पहिले पहिल आस्ट्रेलिया के नगर सडनी के नीचे—बाटनीबे में ग्रेटब्रिटिन के बंधुआ भेजे जाते थे आस्ट्रेलिया और टस्मीनियां के बीच में बास नाम मुहाना है और न्यूज़ीलेण्ड के दोनों द्वीपों के बीच में कूक का मुहाना है॥

४ पाठ॥

पालेन एशिया का वर्णन॥

फिलपेन उपद्वीप और आस्ट्रेल एशिया के पूर्व स्थिर महासागर में जो छोटे २ अनेक उपद्वीप हैं वे पालेन एशिया के नाम से प्रसिद्ध हैं॥

ये द्वीप झुण्डके झुण्ड इसतरह पर विभागहुये हैं॥

पील उपद्वीप—केरोलियन उपद्वीप—और सेण्ड-विचउपद्वीप—अमेरिका और एशिया के मध्यमें हैं॥

आस्ट्रेलेशिया और आमेरिकाके बीचमें फ्रएडली-नवीगेटर——सुसैटी——मार्क्वीसा उपद्वीप हैं ॥

जब पहले पहलही लोग इन उपद्वीपोंमें आये थे तब वहांके सब बासी देव पूजकथे परन्तु सेंडविच और सुसैटी द्वीपों के बासी अपना मत छोड़कर ईसाई हुये ॥

सेंडविच द्वीपमें हवाई नाम उपद्वीप सब से बड़ा है यहां के बासियों ने श्रीयुत नाविक कप्तान कूकसाहब को कोप करके मार डाला ॥

अवशेष ॥

श्रीयुत महाराणी विक्टोरिया साहिबाके आधीन सिवाय ग्रेटब्रटिन और अयरलेण्ड के ये देश हैं ॥

यूरुप में हेलीगोलेण्ड द्वीप एल्ब नदी के दहाने पर——जिब्राल्टर-माल्टा-आईयोनियन के द्वीप हैं ॥

एशियामें ब्रटिश हिंदुस्तान-लङ्का-अदन-पीग, टनाश्रम के ज़िले-सिंगापुर-लिव्वान-हांगकांग-उपद्वीप हैं ॥

आफ्रिकामें-सिरालिओन-गिनी-सेएटहेलीना, असेनशन कालोनी अन्तरीप-नेटल——मारीशियस उपद्वीप हैं ॥

आमेरिकामें——ब्रटिशआमेरिका-हिंडूरास-अङ्गरेज़ी उपद्वीप-पश्चिमीहिन्द-ब्रटिशगियाना-फाकलेण्डी उपद्वीप हैं ॥

ओशनियां में—आस्ट्रेलिया—टस्मेनियां—न्यूज़ीलेण्ड हैं ॥

श्रीयुत महाराणी विक्टोरिया का राज्य पृथ्वीके छठे भाग के लगभग है और प्रजा कुल पृथ्वी के पांचवें भाग के लगभग है और राज्य का विस्तार ग्रेटवृटिन और अयरलेण्ड से ६० गुनेके लगभग अधिकहै और सब समुद्रमें जहाज़ जाता है और सब बरषौड़ी आमदनी मालगुज़ारी से एक अरब के लगभग है ॥

और सेना दो लाख बीसहज़ार के लगभग है और सात सौ के लगभग जहाज़ जिसमें १८ हज़ार से अधिक तोप और ८० हज़ार सिपाही रहते हैं ॥

इति

रस अरु युग्म मिलाइके नव शशि करो विचार ॥
अधिक मास वैशाख तिथि तीज वृहस्पति बार ॥
सकल गुणन की खानि हैं मुन्शी रामप्रसाद ॥
वर्णन करि भूगोल को सबको हरो विषाद ॥

४२.७७२
१८-६-६५ई०